



ST. ALOYSIUS' COLLEGE

AUTONOMOUS
JABALPUR- 482001
MADHYA PRADESH, INDIA

CRITERION-3

RESEARCH, INNOVATIONS AND EXTENSION

Key Indicator – 3.4

Research Publications and Awards

Metric No.: 3.4.4

Books/Chapters Published

Document Name

Cover Page of Book Chapters

2021





ST. ALOYSIUS' COLLEGE

(AUTONOMOUS), JABALPUR(M.P.)

Reaccredited 'A+' Grade by NAAC (CGPA 3.68/4.00)

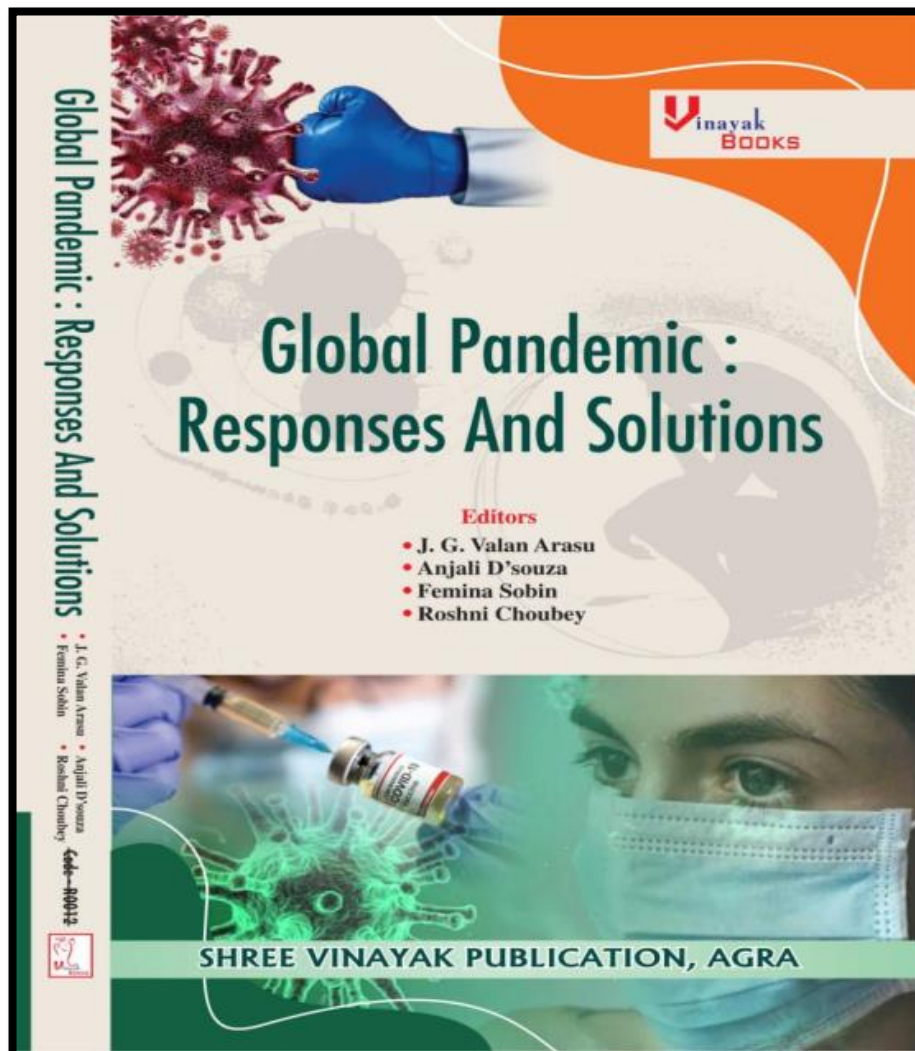
College with Potential for Excellence (CPE) by UGC

DST-FIST Supported & Star College Scheme by DBT.

Research Publications and Awards

3.4.4 Number of Books and Chapters in edited volumes published per teacher 2021

Edited Books





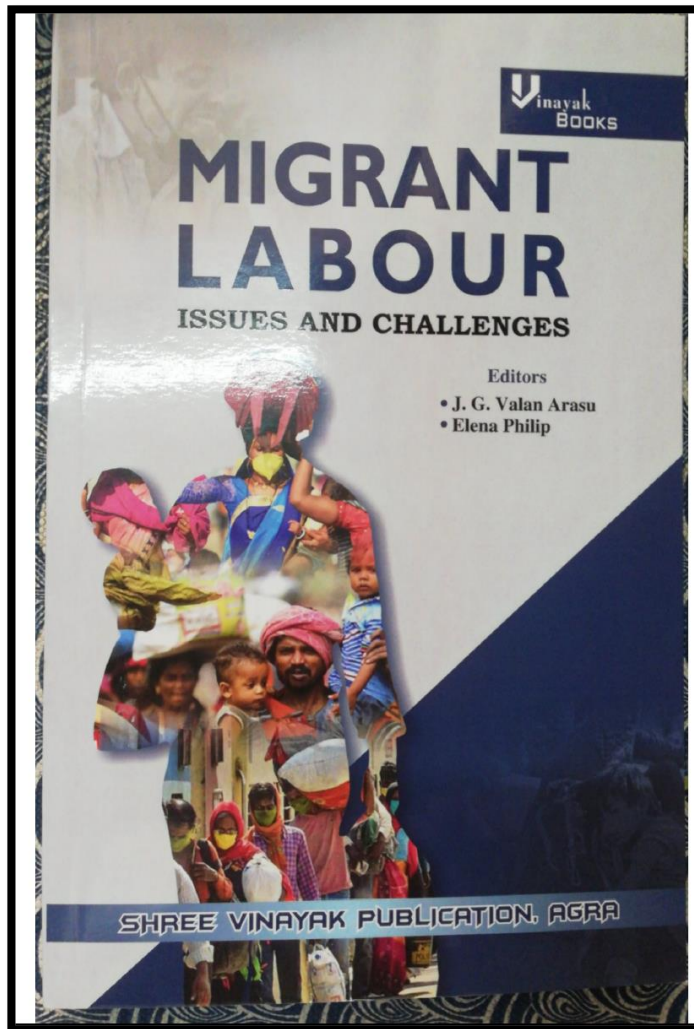
ST. ALOYSIUS' COLLEGE

(AUTONOMOUS), JABALPUR(M.P.)

Reaccredited 'A+' Grade by NAAC (CGPA 3.68/4.00)

College with Potential for Excellence (CPE) by UGC

DST-FIST Supported & Star College Scheme by DBT.



About Editors



J. G. Valan Arasu, Principal, St. Aloysius College (Autonomous), Jabalpur, Reaccredited A+ Grade by NAAC (CGPA) 3.68/4.00, College with Potential for Excellence by UGC, DST-FIST supported and College with DBT Star scheme, Jabalpur, M.P. He is also the Additional Director of St. Aloysius Institute of Technology, Jabalpur. Academic Achievements Include a doctoral degree in Economics on "Impact of globalization on infrastructural development in India since 1981". He is a registered research guide in economics. He is a member of NAAC peer team and also member of many academic, administrative & professional bodies. He has authored 01 book & edited 20 books, published more than 69 articles and research papers in journals, books & news papers. He has completed three minor research projects and organized number of national seminars, conferences and workshops sponsored by UGC and other agencies. He has been a resource person for leadership and human resource development programs and has conducted several retreats and orientation Programs. As the National Coordinator of World Wide Marriage Encounter, India he has represented the country in various parts of the world for 04 years and conducted orientation programs and meetings at the National and International levels.

Dr. Elena Philip is the Dean of Social Science, St. Aloysius College (Autonomous), Jabalpur. She has 45 years of teaching experience. Areas of specialization are Macro Economics, Monetary Economics, Economics of Growth and Development, Agricultural Economics, International Economics and Financial Markets. She is a research guide. She has published many research papers, edited books and successfully completed UGC sponsored minor and major research projects



SHREE VINAYAK PUBLICATION

229, Shastripuram, Agra-282007

Mobile : +91 9412458170, 9893635398

e-mail : shreevinayakpublication2009@gmail.com

info@vinayakpublishers.com

sales@vinayakpublishers.com

rajesh@vinayakpublishers.com

visit us : www.vinayakpublishers.com

MIGRANT LABOUR

ISSUES AND CHALLENGES

Price : India ₹ 499.00

Abroad USD \$ 11.8

ISBN : 978-93-91267-33-9



9 789391 267339

Follow us on:



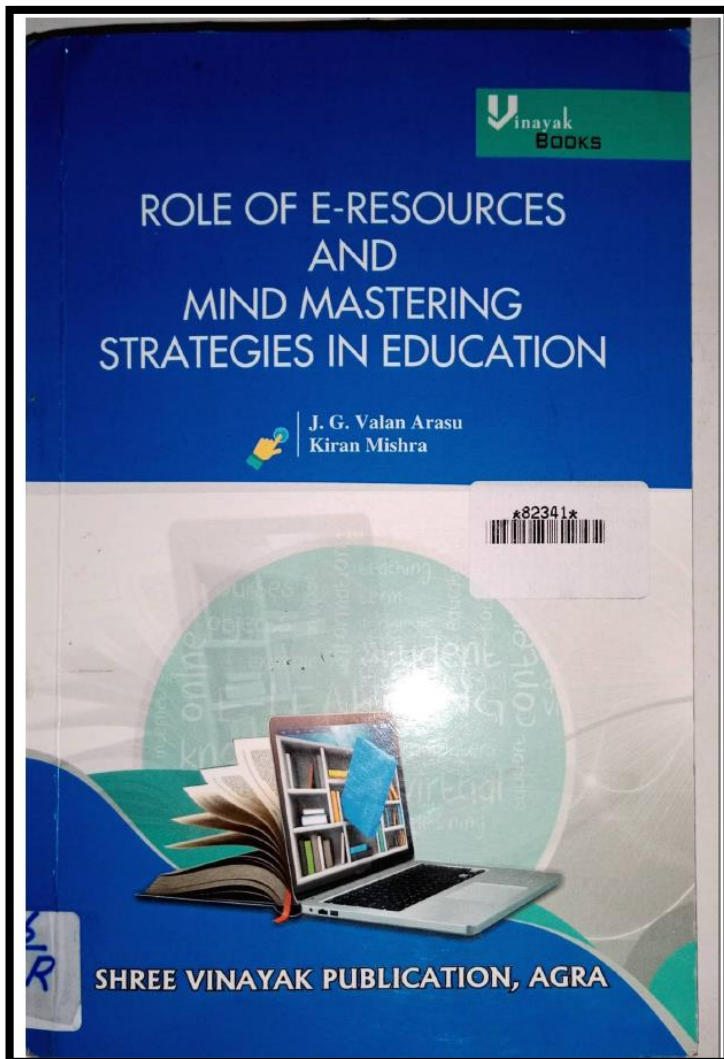
ST. ALOYSIUS' COLLEGE

(AUTONOMOUS), JABALPUR(M.P.)

Reaccredited 'A+' Grade by NAAC (CGPA 3.68/4.00)

College with Potential for Excellence (CPE) by UGC

DST-FIST Supported & Star College Scheme by DBT.



Publisher
SHREE VINAYAK PUBLICATION
(Educational Book Publisher)
229, Shastripuram, Sikandra, Agra-282007 (U.P.)
Contact : 9412458170, 9893635398
Email : info@vinayakpublishers.com
shreevinayakpublication2009@gmail.com

Visit us : www.vinayakpublishers.com

© Editors

First Edition : 2021

Code : R0181

ISBN : 978-93-91267-24-7

Price India ₹ 499
Abroad USD \$ 11.8

Type setting & Printing
Shree Vinayak Publishing Unit, Agra

No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system of transmitted, in any form or by any means, mechanical, photocopying recording, or otherwise, without prior written permission of the publisher. Vinayak has obtained all the information in this book from the sources believed to be reliable and true. However, Vinayak or its editors or Author don't take any responsibility for the absolute accuracy on any information published and the damages or loss suffered thereupon. All disputes subject to Agra (UP) Jurisdiction only.

For Further information about the books published by vinayak log on to www.vinayakpublishers.com or email to shreevinayakpublication2009@gmail.com



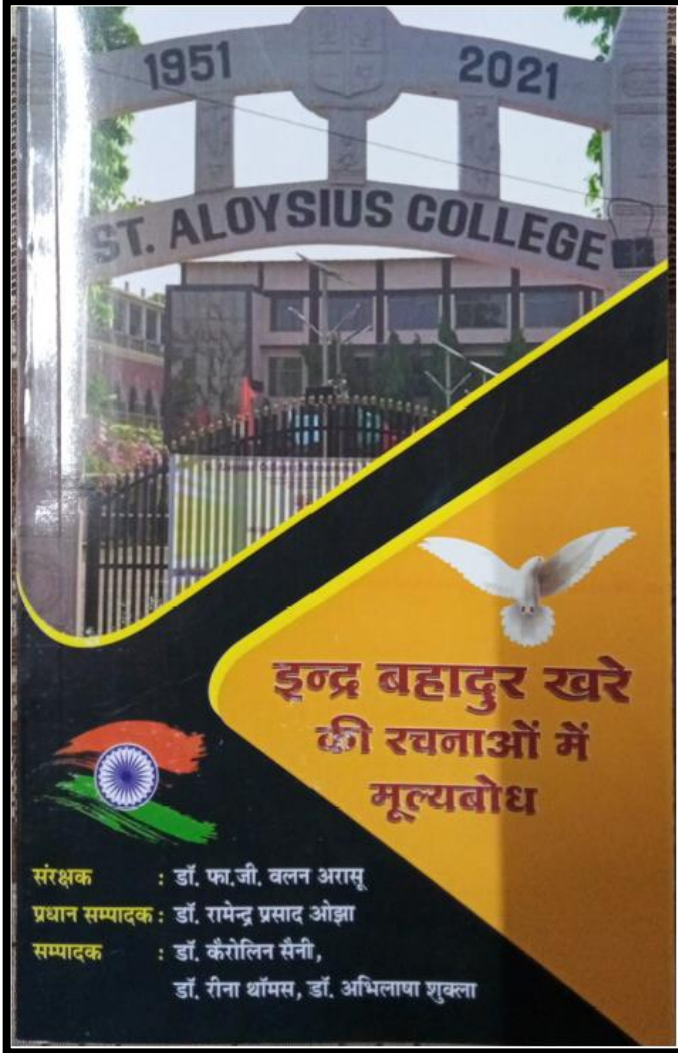
ST. ALOYSIUS' COLLEGE

(AUTONOMOUS), JABALPUR(M.P.)

Reaccredited 'A+' Grade by NAAC (CGPA 3.68/4.00)

College with Potential for Excellence (CPE) by UGC

DST-FIST Supported & Star College Scheme by DBT.



संरक्षक : डॉ. फा.जी. वलन आरासू
प्रधान सम्पादक : डॉ. रामेन्द्र प्रसाद ओझा
सम्पादक : डॉ. कैरोलिन सैनी,
डॉ. रीना थॉमस, डॉ. अभिलाषा शुक्ला

ISBN	- 978-93-89399-64-6
पुस्तक का नाम	- इन्द्र बहादुर खरे की रचनाओं में मूल्यबोध
सम्पादक का नाम	- प्रो. डॉ. रामेन्द्र प्रसाद ओझा
स्थान	- अध्यक्ष-हिन्दी विभाग, सेंट अलॉयसिअस महाविद्यालय जबलपुर, मध्यप्रदेश पिन कोड - 482001
दूरभाष	- 0761-2620738, 70000 83746
ई-मेल	- drojha.sac@gmail.com
वर्ष	- 2021
संस्करण	- प्रथम
सजिलद/पेपर बैक	- पेपर बैक
मूल्य	- 250 रुपये मात्र
पेज	- 232
विषय	- शोध लेख
प्रकाशक	- संदर्भ प्रकाशन, भोपाल
मुद्रक	- साफ्ट प्रो कम्प्यूटर, जबलपुर
बार कोड	-



(ii)



ST. ALOYSIUS' COLLEGE

(AUTONOMOUS), JABALPUR(M.P.)

Reaccredited 'A+' Grade by NAAC (CGPA 3.68/4.00)

College with Potential for Excellence (CPE) by UGC

DST-FIST Supported & Star College Scheme by DBT.

CHAPTERs IN BOOK Indra Bahadur Khare ki Rachnao me Mulyabodh with

ISBN NO : 978-93-89399-64-6

सुरबाला में मूल्य बोध

डॉ. रामेन्द्र प्रसाद ओझा

अध्यक्ष हिन्दी विभाग

संत अलॉयसियस महाविद्यालय (स्वशासी)

जबलपुर (म.प्र.) मोबा. : 9827751341

यदि अनुभूतिचर्या प्रकृति प्रदत्त मानवीय नियति है तो उसके परिष्कार का प्रयत्न पुरुषार्थ का उज्ज्वल पक्ष है। संवेदनाओं में व्यापकता, विशदता और गहनता का मूल उत्स यही है। साधना पक्ष के प्रति अनन्य समर्पण, दृढ़ इच्छा शक्ति, चैतन्य चैतनिकता और जीव की अपेक्षा जीवन की महत्ता की स्वीकृति ही अनुभूति के परिष्कार का वह प्रस्थान बिन्दु है जहाँ से जीवन मूल्य सिद्ध होते हैं। समग्र मानवता की मंगल कामना की दृष्टि से करणीय-अकरणीय का विचार मूल्य बोध का परिणाम कहा जाए तो अनुचित नहीं होगा। कोई भी सर्जक जब तक इन कसौटियों पर खरा नहीं उतर पाता तब तक मूल्यबोध की परंपरा का वाहक भी नहीं बनता। कोरी उपदेशात्मकता से निवृत्ति पाकर अंतर्तम को इंकृत करने की सामर्थ्य किसी भी सर्जना में तभी मुखर हो पाती है जब सर्जक की अंतर्दृष्टि सत्य-असत्य में भेद करने में समर्थ हो। सर्जक की नेतृत्व क्षमता की परख भी इसी से होती है।

जीवन मूल्यों के विश्लेषण, आचरण और स्थापन की परंपरा सनातन है। सभी भाषाओं के रचनाकार इससे प्रेरित हुए हैं। हिन्दी साहित्य जगत् भी इससे अछूता नहीं है। कवि इन्द्र बहादुर खरे इस सुदीर्घ शृंखला की सशक्त कड़ी हैं। जीवन के विविध रंगों की छटा उनके लेखन में बिखरी हुई है। वैयक्तिक केशोर्य सम्मोहन से लेकर समग्र मानवता के कल्याण तक की यात्रा उनके जीवनानुभवों की संचित निधि है। यद्यपि उन्हें अल्प आयु ही मिली थी और वे जीवन के इकतीस वसंत भी नहीं देख सके थे। वह बहुत साधन-संपन्न भी नहीं थे। फिर भी लेखनी में प्राणवत्ता की कोई न्यूनता नहीं है। यह उनकी जन्मजात मौलिक प्रतिभा का ही परिणाम है। अध्यापक की भूमिका के कारण वैश्विक साहित्य के विभिन्न पड़ावों, धाराओं और आन्दोलनों से वे भलीभांति परिचित प्रतीत हुए हैं। प्रतिभा और ज्ञान का समन्वय ही उन्हें एक श्रेष्ठ कवि के रूप में स्थापित करता है। प्रो. राज कुमार सिंह ने सत्य कहा है कि, "उनके गीतों को पढ़ने से ऐसा लगता है कि उनमें सृजन की अपरिमेय ऊर्ध्वगामिनी संभावनायें थीं। वे न केवल अद्वितीय प्रतिभा के धनी थे, अपितु प्रतिभा के पुजारी भी थे।"

इन्द्रबहादुर खरे की रचनाओं का प्रकाशन उनके निधन के लम्बे अंतराल

(3)





ST. ALOYSIUS' COLLEGE

(AUTONOMOUS), JABALPUR(M.P.)

Reaccredited 'A+' Grade by NAAC (CGPA 3.68/4.00)

College with Potential for Excellence (CPE) by UGC

DST-FIST Supported & Star College Scheme by DBT.

खरे जी की रचनाओं में यथार्थ बोध का समीक्षात्मक अध्ययन

डॉ. आशु जैन

समन्वयक, साहित्य विभाग

संत अर्जुनसिंह महाविद्यालय (स्वराजपुरी)

जबलपुर (म.प्र.)

कवि श्री इन्द्र बहादुर खरे द्वारा रचित काव्य संग्रह मोर के गीत की समीक्षा करना स्वयं में अत्यंत कठिन कार्य है। इतने महान कवि की रचनाओं की समीक्षा करना सूर्य के दीपक दिखलाने के समान है किन्तु फिर भी छोटा सा प्रयास किया है कवि के रचनात्मक मन एवं भावों को पढ़ने का।

पृष्ठ क्रमांक 123 में रचिता कविता 'झरने से मैं कवि ने झरने की तरह अनवरत बहने और चलते रहने का संदेश दिया है। किस तरह झरना सुख दुःख सहकर भी निरंतर बहता है, गिरि की चोटों खाकर भी कुछ हैसता सा रहता है स्वयं की चोटों को स्वयं ही अपने हृदय में संजाकर औसू पीकर भी उछल-उछल कर झरना चलता रहता है कवि कहना चाहते हैं कि मनुष्य को भी इस झरने की तरह ही होना चाहिए। देखा जाए तो मानव जीवन में भी यही सब होता है, अपने ही दुःख देते हैं और खुद ही औसूओं को पीकर हमें निरंतर बहना होता है क्योंकि जीवन चलने का नाम है और इस जीवन की उपमा झरने को देकर एक जलमयी सौंदर्य का प्रादुर्भाव हुआ है। जिस तरह झरने का जीवन आगे बढ़ता है वह सदैव बहता है चाहे राहों में लाखों कंटक आए या बड़ी बड़ी घट्टानें चाहे जानन धन के हो अधियारे या फिर सागर में मिल जाने का लेकिन झरना कभी रुकता नहीं और मनुष्य को भी नहीं रुकना चाहिए किन्तु सदैव वाद रखना चाहिए कि जीवन का परम सत्य मृत्यु ही है जिस तरह झरने का अंत सागर होता है उसी तरह मनुष्य जीवन का अंत मृत्यु है इसे भूलना नहीं चाहिए किन्तु हर के कारण रुकना भी नहीं चाहिए।

कवि की अगली कविता 'झूठ है कल' पृष्ठ क्र. 125 पर अंकित है। इस कविता में कुछ कल्पनाएं कुछ अधूरी इच्छाएँ और कुछ टूटे स्वप्न चित्र अंकित हैं और दुखी मन से कवि संसार की बाया को समझते हुए आने वाले कल को झूठ की सच्चा दे रहे हैं। कवि को अनुसार ये जग सब कुछ जानता है इसे मैं अपनी बहानी क्या तुनाऊँ? प्रेम रूपी स्वप्न दिखाए गए और फिर वे स्वप्न भी पूर्ण न हो सक, जो गीत गुनगुनाए वे भी अचूरे ही रह गए। एक कवि मन पीड़ा और प्रेमी हृदय का टूटा स्वप्न भली भाँति अंकित किया है आगे कवि कहते हैं कि अवश्य ही मैंने किस को कभी निराशा किया होगा किसी के दुःख का मैं ही कारण बना

(135)





ST. ALOYSIUS' COLLEGE

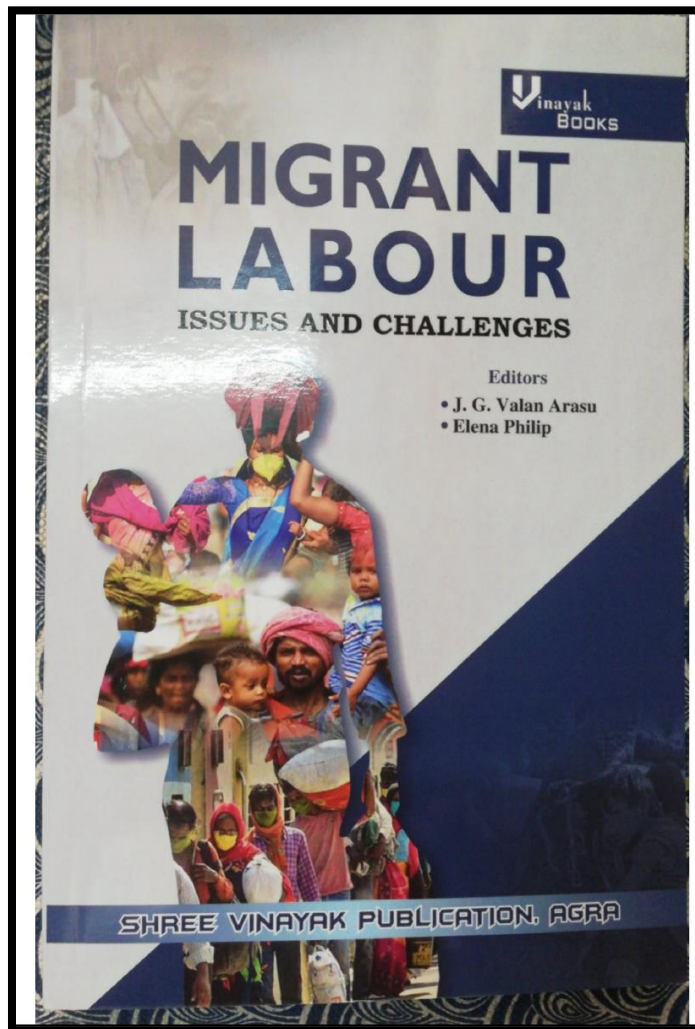
(AUTONOMOUS), JABALPUR(M.P.)

Reaccredited 'A+' Grade by NAAC (CGPA 3.68/4.00)


College with Potential for Excellence (CPE) by UGC


DST-FIST Supported & Star College Scheme by DBT.

Chapters In Book Migrant Labour with ISBN NO: 978-93-91267-33-6









About Editors

 **J. G. Valan Arasu**, Principal, St. Aloysius College (Autonomous), Jabalpur, Reaccredited A+ Grade by NAAC (CGPA) 3.68/4.00, College with Potential for Excellence by UGC, DST-FIST supported and College with DBT Star scheme, Jabalpur, M.P. He is also the Additional Director of St. Aloysius Institute of Technology, Jabalpur. Academic Achievements Include a doctoral degree in Economics on "Impact of globalization on infrastructural development in India since 1981". He is a registered research guide in economics. He is a member of NAAC peer team and also member of many academic, administrative & professional bodies. He has authored 01 book & edited 20 books, published more than 69 articles and research papers in journals, books & news papers. He has completed three minor research projects and organized number of national seminars, conferences and workshops sponsored by UGC and other agencies. He has been a resource person for leadership and human resource development programs and has conducted several retreats and orientation Programs. As the National Coordinator of World Wide Marriage Encounter, India he has represented the country in various parts of the world for 04 years and conducted orientation programs and meetings at the National and International levels.

 **Dr. Elena Philip** is the Dean of Social Science, St. Aloysius College (Autonomous), Jabalpur. She has 45 years of teaching experience. Areas of specialization are Macro Economics, Monetary Economics, Economics of Growth and Development, Agricultural Economics, International Economics and Financial Markets. She is a research guide. She has published many research papers, edited books and successfully completed UGC sponsored minor and major research projects

SHREE VINAYAK PUBLICATION
229, Shastripuram, Agra-282007
Mobile : +91 9412458170, 9893635398
e-mail : shreevinayakpublication2009@gmail.com
info@vinayakpublishers.com
sales@vinayakpublishers.com
rajesh@vinayakpublishers.com
visit us : www.vinayakpublishers.com

MIGRANT LABOUR ISSUES AND CHALLENGES
Price : India ₹ 499.00
Abroad USD \$ 11.8
ISBN : 978-93-91267-33-9
9 789391 267339

Follow us on:      



ST. ALOYSIUS' COLLEGE

(AUTONOMOUS), JABALPUR(M.P.)

Reaccredited 'A+' Grade by NAAC (CGPA 3.68/4.00)

College with Potential for Excellence (CPE) by UGC

DST-FIST Supported & Star College Scheme by DBT.

22

Migrant Labour Problem in India : An Overview

Dr. Vishwas Patel, Dr. Tuhina Johri

Abstract :

Migration is not a new phenomenon to the human race. It is influenced by social and economic structure and development of the country. Millions of migrant workers are anticipated to be left unemployed in India due to the lockdown and subsequent fear of recession. The sudden COVID-19 pandemic has brought specific difficulties and pushed the workers jobless, homelessness, hunger and mass migration back to their home. The research paper is mainly focus on causes and consequences of migration in India and the paper considers Constitutional provisions, Governmental initiatives and suggestions for migrant labour.

Keywords : Migration, Human Rights, Constitutional Provisions, Governmental Initiatives, Legislative Measures.

Introduction :

Migration is the movement of people away from their accustomed place of residence, across either within country or across countries. Migrants leave their place in pursuit of better employment, better wages and better quality of life or better education, to flee maltreatment. They can be among the most vulnerable members of the communities in which they live and work. Many of the workers suffer serious violations of their human rights, including ill-treatment by immigration or law enforcement authorities, abusive or exploitative working conditions, a lack of basic workplace rights and protections, limited access to social security, systemic discrimination which may be characterized by the denial of dignity, justice, equality and the inalienable human rights of certain downtrodden sections of the society.

According to the 2011 Census, 45 Crore persons have changed their place of residence within the country and out of this, 4.6 Crore or 10.22% left their place for work. India's uneven development over the last three decades has seen a huge wave of people migrating from less develop to the more develop states in search of better job opportunities. According to the World Bank, after the declaration of nationwide lockdown, India's 40 million migrant workers are facing the major brunt



ST. ALOYSIUS' COLLEGE

(AUTONOMOUS), JABALPUR(M.P.)

Reaccredited 'A+' Grade by NAAC (CGPA 3.68/4.00)

College with Potential for Excellence (CPE) by UGC

DST-FIST Supported & Star College Scheme by DBT.

15

Political Analysis of the Crisis of Migrant Labour in India during Covid- 19

Ms. Bhavna Tekam

Abstract :

The lockdown because of COVID-19 crisis, announced on March 24 at short notice has caused immense distress to migrant workers around the country. Thousands of migrant workers started walking across India in a desperate attempt to reunite with their families in their native places. It is one of the most critical issue which has arisen during this lockdown. The condition of these migrant workers has emerged as an important issue as the novel coronavirus itself. The COVID-19 crisis has, for the first time, brought migration to the focus of public health and disaster response in India. Both the Centre and the State government had failed to serve their duties towards them and to fulfill their responsibility to send migrant labourers back to their states. Now the questions are arising about their welfare and the lack of legal protection for their rights. The people working for labour welfare have recalled a 1979 law to regulate the employment and working conditions of inter-State migrants. In this paper, the perception, legality and Politics of Migrant Worker crisis will be explained. Several ways will be summarized to deal with this huge crisis. It will be tried to suggest various steps to be taken by the government keeping the future of Migrant Workers in focus.

Introduction :

In the past, a mass exodus would happen due to a disaster like a famine, drought, flood, or regional conflict. An exodus would be from the world where such a calamity was unfolding. While we continue to see episodes of such egress, now there are new narratives of mass egress caused by demonetization, violence against migrants, and the lockdown imposed to contain the spread of COVID-19. The common narratives here is that the decisive role played by the state or the lack of it. It is within the context of state action that migrants have drawn sharp attention in debates over public health and economics for a minimum of five reasons. First, the numbers involved are very high. Let's take the instance of Bihar which features a population of about 123 million. The number of migrants in Bihar is estimated to be on the brink of 10 million, of which three million could also be inter-State migrants. Second, India's economy, particularly of the expansion centres, depends on the services of migrant workers. Sectors like construction, manufacturing units, agriculture and mining would come



ST. ALOYSIUS' COLLEGE

(AUTONOMOUS), JABALPUR(M.P.)

Reaccredited 'A+' Grade by NAAC (CGPA 3.68/4.00)

College with Potential for Excellence (CPE) by UGC

DST-FIST Supported & Star College Scheme by DBT.

4

Rural to Urban Migration : Issues and Challenges for Urban Social Systems

Dr. Elena Philip

"Migration is an expression of the human aspiration for dignity, safety and a better future. It is part of the social fabric, part of our very make-up as a human family". Ban Ki-moon. Former, UN Secretary General

Abstract :

Migrant workers are an integral part of the urban workforce and constitute the backbone of informal unorganized work in urban areas. There is an overall pattern of labor migration from rural to urban areas. These migrants undertake a vast array of casual work in construction, manufacturing, services, and farm sector. Urbanization occurs mainly because people move from rural areas to urban areas and it results in growth in the size of the urban population and the extent of urban areas. These changes in population lead to other changes in land use, economic activity and culture. Since the initiation of economic reforms in India, India has been experiencing rapid urbanization and rural to urban migration. The magnitude of migration to cities has grown exponentially with the growth of urban centres in a liberalized economy. Migration has great impact on economic, social, cultural and psychological life of people, both at the place of emigration as well as of migration. Rural-urban migration has played a significant role and it still continues to be an important factor in the urbanization process. There is a significant contribution to the growth of Indian cities from internal migration as migration impacts competitiveness, productivity and jobs. Rural to urban migration is significantly related to various dimensions of the migrant's wellbeing such as, better education, job opportunities, health facilities, standard of living and wages. This paper discusses the impact of rural-urban migration and the issues and challenges of migrant workers for urban social systems.

Keywords : Rural-Urban Migration, Migrant workers, Urbanization, Industrialization, Economic Development.

Introduction :

Early theorization about migrants and migration, presented migration as a decision made by individuals to move to places with better employment opportunities and earnings typically in urban



ST. ALOYSIUS' COLLEGE

(AUTONOMOUS), JABALPUR(M.P.)

Reaccredited 'A+' Grade by NAAC (CGPA 3.68/4.00)

College with Potential for Excellence (CPE) by UGC

DST-FIST Supported & Star College Scheme by DBT.

5

Patterns of Migration in India : A Historical Perspective

Dr. Manju Maria Solomon

Abstract :

Migration of workers is a human phenomenon which has historical roots and wider implications. The search for the source of survival. The blissful life, has ever remained the inspiring and the dovetailing force of migrations within countries or of trans-migration. Migrations have economic genesis but resulting socio-political cultural ramifications. Indeed, mingling of different cultures has had positive consequences as well as placing strain on the culture and life of the upcoming society affected in either way by migration. Migration is a form of spatial mobility of population between one geographical unit and another involving a permanent change of residence (UN, 1958). For a large country like India, the study of movement of population in different parts of the country helps in understanding the dynamics of the society better. The paper is an attempt to understand the concept of patterns of migration in India.

Keywords : Migration, Patterns, Pull and Push factors, Mobility.

Introduction :

India as one of the oldest civilizations and land of opportunities has been remained a magnet for visitors, traders, students and warriors from all over the world since very long. Migration is a natural process that often happens depending on the socio-economic, demographic, cultural, political and environmental factors related to the migrant people. Migration is not a mere shift of people from one place of residence to another. It is most fundamental to the understanding of continuously changing space content and space relationships of areas (Gosal, 1961). There are many definitions of migration. According to Lee, "Migration is permanent or semi-permanent change of residence." According to Weinberg, "Human migration as change of place permanently or temporarily for an appreciable duration as in case of seasonal worker. According to Safa, "Migration is normally viewed as an economic phenomenon through non-economic factors obviously has some bearing (Singh, 1989). Migration from India to various parts of the world was very old and in modern times five patterns of Indian emigration were identified such as i) Unskilled labour emigration, ii)



ST. ALOYSIUS' COLLEGE

(AUTONOMOUS), JABALPUR(M.P.)

Reaccredited 'A+' Grade by NAAC (CGPA 3.68/4.00)

College with Potential for Excellence (CPE) by UGC

DST-FIST Supported & Star College Scheme by DBT.

10

Labour Rights for Migrant Labour in India : An Overview

Dr. Reeta Chouhan

Abstract :

Today's economic growth in India depends on the mobility of labour. The contribution of migrant workers to the economy is huge. There is an urgent need to find a solution to turn immigration into a more dignified and rewarding opportunity. Without this, achieving inclusive growth will remain a very distant dream. After independence, India adopted various labour policies to improve the working conditions of workers in the unorganized sector. These workers also have some labour laws. Intact, its implementation is mostly ineffective. Therefore, migrant workers and workers in the unorganized sector are fighting for their labour rights and implementing various labour laws in according to international labour standards. This article tries to examine the present status of migrant labours, their problems during lockdown and policy framework in India. It also tries to evaluate the present labour laws and their effectiveness for the betterment of migrant labours.

Keywords : Industry, labour migration, rural development, Labour Laws, minimum wages.

Introduction :

Migration has always been a strategy used by the majority of workers in India to realize their desire to escape poverty and obtain a decent livelihood. Migrant workers have contributed to the development of the country. Migrants from within or outside their respective state have an integral role to play. Evidence shows that up to 140 million poor people from rural India seasonally migrate to cities, industries and farms in search of work. These migrants are engaged in a large number of temporary jobs in the construction, manufacturing, service and agriculture sectors. They are part of the unorganized informal workforce in India. It is estimated that more than 350 million people are still excluded from services and rights as workers and citizens, in their rural families and workplaces in urban, industrial and rural areas.



ST. ALOYSIUS' COLLEGE

(AUTONOMOUS), JABALPUR(M.P.)

Reaccredited 'A+' Grade by NAAC (CGPA 3.68/4.00)

College with Potential for Excellence (CPE) by UGC

DST-FIST Supported & Star College Scheme by DBT.

MICROEXTRACTION TECHNIQUES IN ANALYTICAL TOXICOLOGY



Edited by

Rajeev Jain

Ritu Singh



7

Application of Single Drop Microextraction in Analytical Toxicology

Archana Jain¹, Manju Gupta² and Krishna K. Verma¹

¹Department of Chemistry, Rani Durgavati University, Madhya Pradesh, India

²Department of Chemistry, St. Aloysius College (Autonomous), Madhya Pradesh, India

CONTENTS

7.1 Introduction	131
7.2 Strategy of Microextraction	133
7.2.1 Complexity of Biological Samples	133
7.2.2 Single Drop Microextraction	133
7.2.3 Drop Protection	133
7.3 Modes of Extraction and Applications	135
7.3.1 Direct Immersion SDME	135
7.3.2 Headspace SDME	136
7.3.3 Three-Phase SDME	137
7.4 Recent Advances	138
7.4.1 Newer Solvents	138
7.4.2 Automation	139
7.5 Conclusions	140
Acknowledgement	140
References	141

7.1 Introduction

Miniaturized approaches for extraction of analytes using solvents are collectively grouped under liquid-phase microextraction (LPME) or solvent microextraction, and the growth in activities in this field began when a drop of organic solvent of a few microliters size was employed for extraction, the technique being termed single drop microextraction (SDME). The innovative format of SDME, consisting of a drop suspended at the needle tip positioned in the aqueous sample solution, has been the source of a variety of SDME modes and a collection of LPME techniques integrating different principles (Tang et al. 2018). Initial experiments involved aspirating the gaseous sample over a collector drop hanging at the tip of a silica capillary, and diverting the drop to the automated analysis system (Liu and Dasgupta 1995). Later, the extraction was performed into a 1 μ L drop of n-octane suspended from a microsyringe needle tip being placed in a stirred aqueous sample (direct immersion SDME, DI-SDME) (Jeannot and Cantwell 1997) or the headspace of the sample (headspace-SDME, HS-SDME) (Theis et al. 2001), and after extraction analyzed by gas chromatography (GC). Two modifications were suggested to overcome the low pre-concentration factor of analytes observed in SDME. First was a

DOI: 10.1201/9781003128298-7

131



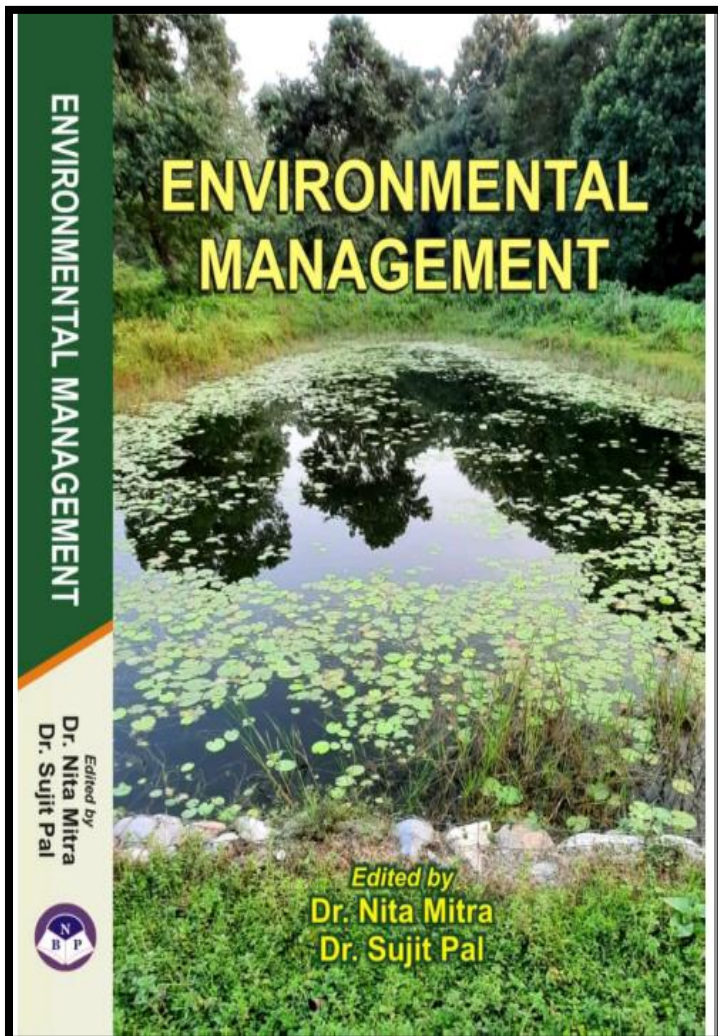
ST. ALOYSIUS' COLLEGE

(AUTONOMOUS), JABALPUR(M.P.)

Reaccredited 'A+' Grade by NAAC (CGPA 3.68/4.00)

College with Potential for Excellence (CPE) by UGC

DST-FIST Supported & Star College Scheme by DBT.



CHAPTER
10

A Conceptual Approach: Implementation of Environmental Management System in Educational Institutions

Dr. Sutapa Roy

Abstract

A green and sustainable environment is the necessity of the hour so that we can hand over our future generation a clean and green abode for their healthy existence. Awareness towards the environment needs to be imbibed from an early age and hence environmental studies have been given a distinct place in the academic curriculum. However, this is not sufficient but requires a set-up in the institution that can act as an effective supporting tool for the planning and implementation of sustainable activities in and around the campus. This chapter is an effort to provide a conceptual approach in the development of an operative EMS (Environmental Management System) in the educational institutes along with highlighting the potential barriers that can be faced during the entire process. It also focuses on the various initiatives that can be taken up by the institutes for sustainable development and fostering of consciousness towards a sustainable environment among the students, staff, administration and society.

Keywords: environmental management system, educational institutions

A Conceptual Approach: Implementation of Environmental Management System in Educational Institutions

The environment is the lifeline of all the beings existing on the green planet 'Earth' and henceforth it is the sole responsibility of



ST. ALOYSIUS' COLLEGE

(AUTONOMOUS), JABALPUR(M.P.)

Reaccredited 'A+' Grade by NAAC (CGPA 3.68/4.00)

College with Potential for Excellence (CPE) by UGC

DST-FIST Supported & Star College Scheme by DBT.

3

Oroxylum Indicum: from Utilization & Exploitation to Preservation

Mamta Gokhale* & Isha Deshpande**

*Affiliation: St. Aloysius' College, (Autonomous),
Department of Botany and Microbiology.

**St. Aloysius' College (Autonomous), Biodesign Innovation centre,
Jabalpur, Madhya Pradesh

Abstract

Oroxylum indicum has been a significant point of research in the broad field of life sciences. The plant has been mentioned in ancient literature which makes the research much more worthy. The trivial uses of the plant by the tribal populations demand scientific proof for the said effects caused by the plant. The scientific proof, thus builds the foundation for further research, development of a product, and its commercialization. This review is an insight that focuses on the direction of the progress of research related to Oroxylum indicum, which is an important medicinal tree. Because of the efforts of scientists through research, we have now been able to successfully optimize the process of micropropagation of the tree. This has built a bridge between demand and supply which keeps the chain of economy continuous. The preservation of such a wondrous tree is our responsibility towards mankind and the environment.

Keywords: *Oroxylum; Ayurveda; Medicinal properties; Therapeutic activities; In Vitro Culture.*

The term biodiversity is used widely but its meaning is not clear. The biodiversity of gene, species and ecosystem is regarded as biodiversity. We are familiar with species diversity. Small to smaller and large to larger or from big to bigger components of biodiversity are regarded as the diversity of ecosystem. The ecosystem flow process, resource management is important though all components are generated by nature. Hence, resources and its direct connection with biological components are also important. The present review is an insight that focuses on the direction of the progress of research related to *Oroxylum indicum*, which is an important medicinal tree. Because of the efforts of scientists through research, we have now been able to successfully optimize the process of micropropagation of the tree. This has built a bridge between demand and supply which keeps the chain of economy continuous. The preservation of such a wondrous tree is our responsibility towards mankind and the environment.

About the Editor



Debabrata Das (1969) Ph.D. in Botany (Plant Ecology) is presently working as Associate Professor of Botany and Head, Department of Botany, Government College, Jabalpur. He acted as IQAC Co-ordinator of the same College. He is also working as Associate Professor of Botany, Educational Service (W.B.E.S), He is a pioneer researcher in the College and also the laureate Southwest Bengal zone. He was a research fellow (JRF and SRF) of forest productivity project funded by ICAR, Dehradun and also worked as scientific research fellow from ICAR, Dehradun, India. He is also working as an Assistant Professor, Madhya Pradesh, W.B. Later on he worked as JRF and SRF at Central National Herbarium (CNH), Botanical Survey of India (BSI), Shibpur, Howrah, W.B. under 'Forest India Project'. He has worked in various Medical Herbaria Conservation Areas (MCA) as a special with the aim of Botanical Survey of India, Dehradun, India. He has worked as an Assistant Professor in Environmental studies and in Botany. He has worked as technical adviser in many scientific national and international forums. Now he is working as a research officer in various conferences and conferences of many national and international levels.

Biodiversity and Sustainable Resource Management (Basic to Research)

Dr. Debabrata Das

Biodiversity and Sustainable Resource Management (Basic to Research)



Edited by

Dr. Debabrata Das

Bharati



ST. ALOYSIUS' COLLEGE

(AUTONOMOUS), JABALPUR(M.P.)

Reaccredited 'A+' Grade by NAAC (CGPA 3.68/4.00)

College with Potential for Excellence (CPE) by UGC

DST-FIST Supported & Star College Scheme by DBT.

3/6/24, 12:37 PM EXTENDING NEW AGE HORIZONS OF THE SOCIAL WORK PRACTICE AND EDUCATION: PERSPECTIVES DURING AND P...

EXTENDING NEW AGE HORIZONS OF THE SOCIAL WORK PRACTICE AND EDUCATION:

PERSPECTIVES DURING AND POST COVID-19 PANDEMIC



Voices
from the
Online National
Seminar

Edited by

Dr Fr John PJ
Mr Abraham K Varghese
Dr Sheeba Joseph



Printed & Published by
The Bhopal School of Social Sciences (BSSS)
Habibganj, Bhopal-462024 (M.P.)

<https://online.fliphtml5.com/jnrbnmeq/#p=1>

11

3/6/24, 1:07 PM EXTENDING NEW AGE HORIZONS OF THE SOCIAL WORK PRACTICE AND EDUCATION: PERSPECTIVES DURING AND PO...

Covid-19: Living Under the Umbrella of Mental Stress

Rupali Ahluwalia, PhD
Tarvinder Kaur, PhD
Sejal Kapoor
Shivika Bhatia

Abstract

The last year has been hard on everyone, may it be a school going child, a graduate looking for a job prospect, a teacher teaching to a computer screen, an old employee struggling with the semantics of work from home. All these people have one thing in common: Mental stress. That feeling of anxiety, uncertainty, panic, fear and distress that we carry is more than just a feeling. It is a serious issue which many of us avoid due to shame and constant worry of what society will say, it is high time we realize that everyone has gone through these traumas during the lockdown caused by the pandemic. COVID-19 is a contagious disease which causes acute respiratory issues. It has been seen that many factors leading up to mental strain has been caused due to the effects of COVID-19. Coping from mental stress is an individual process but no one should undergo it alone. This pandemic has caused many cases where in the patients fatality were more due to the trauma and panic which clutched them in a grip so harsh death was the only escape. Isolation is the worst enemy in the coping journey of any disease; ironically the only way to cope through this disease is isolating oneself from others. Isolation has been termed as one of the main causes of all the mental health issues.

<https://online.fliphtml5.com/jnrbnmeq/#p=150>

12



ST. ALOYSIUS' COLLEGE

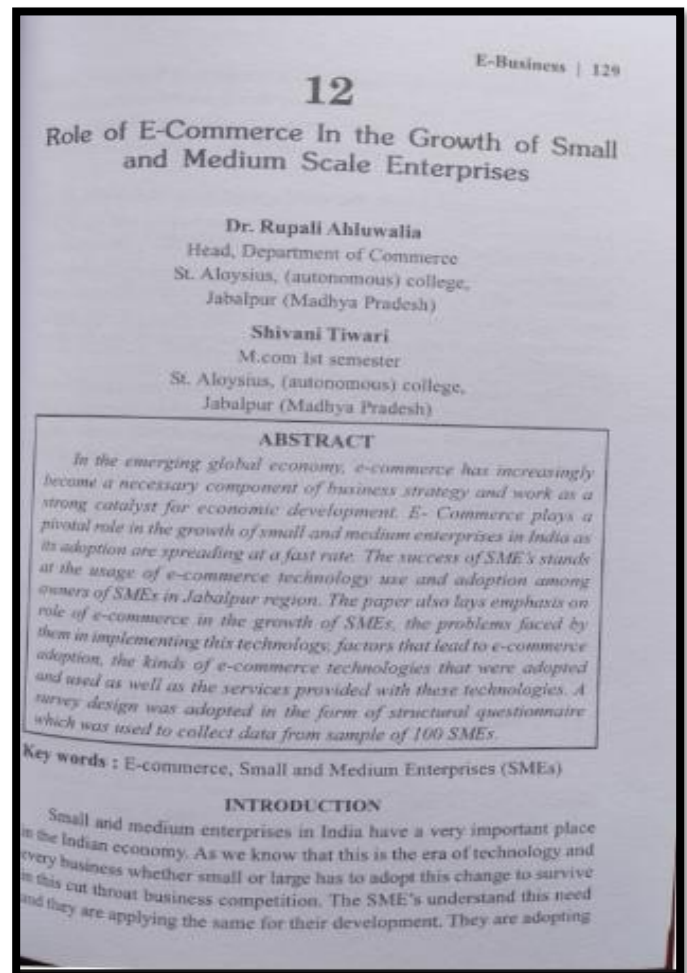
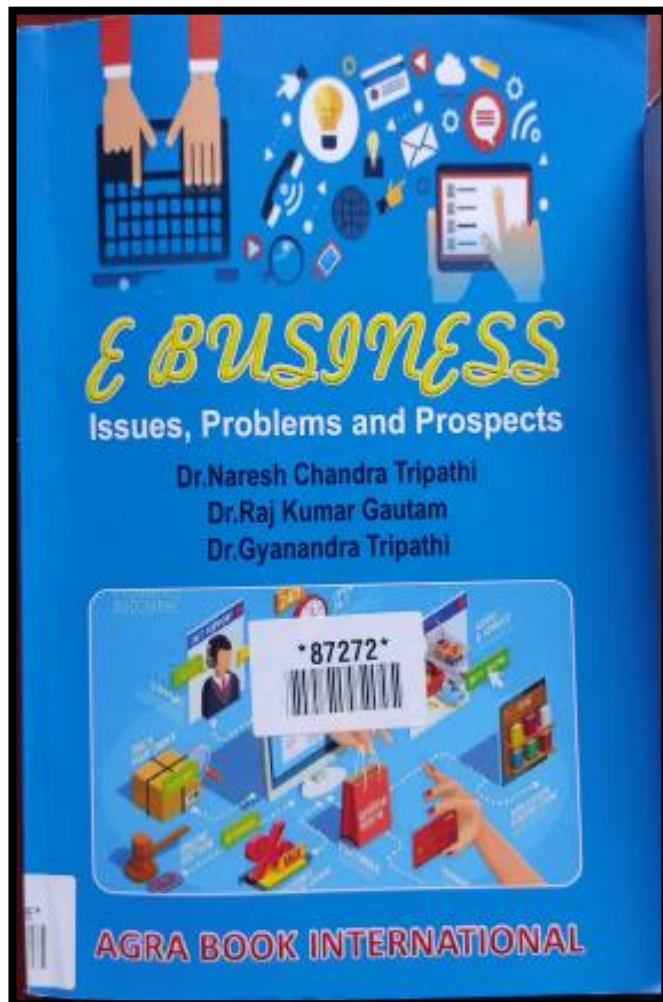
(AUTONOMOUS), JABALPUR(M.P.)

Reaccredited 'A+' Grade by NAAC (CGPA 3.68/4.00)

College with Potential for Excellence (CPE) by UGC

DST-FIST Supported & Star College Scheme by DBT.

Chapters in Book E-Business with ISBN No. 978-81-943970-0-7





ST. ALOYSIUS' COLLEGE

(AUTONOMOUS), JABALPUR(M.P.)

Reaccredited 'A+' Grade by NAAC (CGPA 3.68/4.00)

College with Potential for Excellence (CPE) by UGC

DST-FIST Supported & Star College Scheme by DBT.

9

E-Business and Consumer Satisfaction

Dr. Tarvinder Kaur Kainth

Assistant Professor

Department of Commerce

St Aloysius, (autonomous) college, Jabalpur, Madhya Pradesh

Firdos Fatma Siddiqui

M.Com Ist Semester

St Aloysius, (autonomous) college, Jabalpur, Madhya Pradesh

ABSTRACT

E-Commerce is anything that involves an online transaction. E-Commerce allows consumers to electronically exchange goods and services with no barriers of time and distance. By integrating various online information management tools using Internet, various innovative companies have set up system for taking customer orders, facilitate making of payment, customer service, collection of marketing data, and online feedback respectively. An attempt has been made to critically examine the comparison of customer satisfaction of two big E-Traders and those are Flipkart and Amazon. Both these big players made their own mark in India. A comparative study of Customer satisfaction between Amazon and Flipkart delivers the information about the factors that impacts customer satisfaction to succeed in e-commerce market. This paper is an attempt to analyze customer satisfaction level of Amazon and Flipkart. The primary data was collected. 50 samples are collected through a structured questionnaire. Data were analysed through simple statistical methods like percentage. The major findings of the study is that majority of the customers are satisfied with Amazon.

Keywords : e-commerce, Consumer satisfaction, Search Catalogue, Add Product to Cart, Checkout Process, Online Payment.

INTRODUCTION

The main edge for business these days is e-trade. E-Commerce or Electronic-Commerce means buying and selling of goods, products or services over the internet. E-Commerce is also known as Electronic-



ST. ALOYSIUS' COLLEGE

(AUTONOMOUS), JABALPUR(M.P.)

Reaccredited 'A+' Grade by NAAC (CGPA 3.68/4.00)

College with Potential for Excellence (CPE) by UGC

DST-FIST Supported & Star College Scheme by DBT.

90 | E-Business

8

An Analytical Study of Consumer Behavior towards Online Shopping in Jabalpur City

Dr. Preeti Jain

(Assistant Professor)

Department of Commerce

St. Aloysius (Auto.) College, Jabalpur

E-mail: ppreetijain18@yahoo.co.in

ABSTRACT

Online Shopping is the integral part of life of most of the people in this world, the most popular shopping place. Flipkart, Amazon, Alibaba, Jabong, Myntra, snapdeal etc. are the most popular destinations of online shopping lovers. In today's world people become more time conscious, they feel uncomfortable and time consuming going to market for shopping. Common solution to these problems is Online Shopping because purchasing product online is just one click away. Increasing use of internet provides growth prospects to online market. This research paper highlights the factors which customers keep in mind while shopping. At present companies utilise internet to advertise their product, to get feedback so they can improve their service. The craze of online shopping is increasing day by day. This research has been conducted to know the attitude of consumer towards online shopping with reference to Jabalpur city.

Key words : Online shopping, Digital Market, Shopping sites, Consumer Behaviour.

INTRODUCTION

'Online shopping means shopping through internet'. Online shopping is a form of e-commerce which allows consumers to purchase whatever they want directly from seller through internet world. It is the digital market where everything is available. This market is just one click away. Online shopping enables consumer to buy anything they want at any time. To have access to this digital shopping one just need to have an internet connection, it enables consumer to use 'search' features to find specific



ST. ALOYSIUS' COLLEGE

(AUTONOMOUS), JABALPUR(M.P.)

Reaccredited 'A+' Grade by NAAC (CGPA 3.68/4.00)

College with Potential for Excellence (CPE) by UGC

DST-FIST Supported & Star College Scheme by DBT.

30 | E-Business

3

Educators' Online Buying Behavior : A Step towards Knowledge Management (With Special Reference to Higher Education Institutions in Jabalpur City)

Komal Rawat

Assistant Professor, Dept. of Commerce,
St. Aloysius' College, Jabalpur (M.P.)

Meenakshi Swamy

Assistant Professor, Dept. of Commerce,
St. Aloysius' College, Jabalpur (M.P.)

ABSTRACT

Educators are facilitators of student learning and creators of productive classroom environments, where students can develop skills and abilities they might need at present or in future. The building of education doesn't need any brick and mortar but requires a comprehensive structure of collective human knowledge. Nowadays online shopping of educational material has become new trend of shopping and is rapidly becoming an imperative part of life. The objective of this paper is to unearth the buying behavior of educators for different products and know their stream wise preference towards online shopping in Jabalpur city.

Keywords : Educator, buying behavior, online shopping and knowledge management

INTRODUCTION

In the present era it has been observed that there is a tremendous growth in the internet based network of free online teaching resources which assist teaching and learning process. These resources are called teaching and learning objects, open education material or online learning resources in which innovative and interactive curricula can be designed. Educator is a person who provides education and inspires learners for a systematic knowledge. Educators are buying online of educational material towards the melioration of learners. They create their own Google class



ST. ALOYSIUS' COLLEGE

(AUTONOMOUS), JABALPUR(M.P.)

Reaccredited 'A+' Grade by NAAC (CGPA 3.68/4.00)

College with Potential for Excellence (CPE) by UGC

DST-FIST Supported & Star College Scheme by DBT.

E-Business | 71

6

ASSESSMENT OF CONSUMER SATISFACTION IN E-COMMERCE PLATFORM

Dr. (Mrs.) Nidhi Khurana

(Asst. Professor)

St. Aloysius College (Auto.) Sadar, Jabalpur (M.P.)

ABSTRACT

In this era of globalization, the development of information technology and the internet is growing at a fast pace in the world. Consumer buying preferences has been changed from buying in stores to buying online. This study aims to know the women consumer preference and satisfaction towards online shopping in Jabalpur city. This research also aims to find out factors that influence online shopping behaviour of women. The primary data was collected through a questionnaire from women consumers with online shopping experience through e-commerce websites in India. Necessary statistical tools has been used to interpret the data. The results of this study may help the existing e-businesses or those planning to venture into e-commerce platform.

Keywords : Consumer preference, Consumer Satisfaction, E-commerce

INTRODUCTION

E-commerce has emerged as a great revolution which has made life innovative for people in the world. E-shopping means buying goods or services online by making payment online or offline. The birth and growth of Internet has been the biggest advantage for the world. E-commerce in India has a beginning in the 1999-2000 where one can sell and buy all types of products online. Now a days, companies are using e-platform to represent their product range and services so that it is accessible to the global market and to reach out to a large number of consumers. In online shopping, customers perceive and demand high quality products and services. If they perceive that the e-store is unsatisfactory, they might



ST. ALOYSIUS' COLLEGE

(AUTONOMOUS), JABALPUR(M.P.)

Reaccredited 'A+' Grade by NAAC (CGPA 3.68/4.00)

College with Potential for Excellence (CPE) by UGC

DST-FIST Supported & Star College Scheme by DBT.

110 | E-Business

10

A Comparative Study on Factors Affecting Online and Offline Shopping

Dr. Vanshree Mehta

Assistant Professor, Commerce
St. Aloysius College Jabalpur (MP)

ABSTRACT

In present scenario advancement of technology creates new ways of buying and selling goods and services through internet. Electronic commerce refers to a wide range of online business activities for products and services. There are two mediums available for shopping i.e. Online and Offline shopping. It depends upon a person which medium they follow for shopping. Most of population in India is young and working, so they do not have time to go to market and buy. They prefer online shopping online. On the other hand still there are some persons who don't trust online shopping and purchasing product from traditional market. Present study shows the perception of customers towards online and offline shopping. For this purpose sample of 200 respondents was taken. A well defined questionnaire is used for collecting information. The sample has been collected from Jabalpur city. The purpose of study is to compare offline and online decision making and identify the factors that motivate customers to shop online or go for offline shopping.

Keywords : Consumer, online shopping, offline shopping.

INTRODUCTION

Indian economy is one of the fastest growing economies in the world. Retail sector is back bone of Indian economy. Shopping is an action of buying goods or services offered by one or more retailers. Indian customers are very conscious when buying products. At present, people buy products of their choice through online or offline. Offline shopping is the traditional way of shopping while online shopping is act of buying



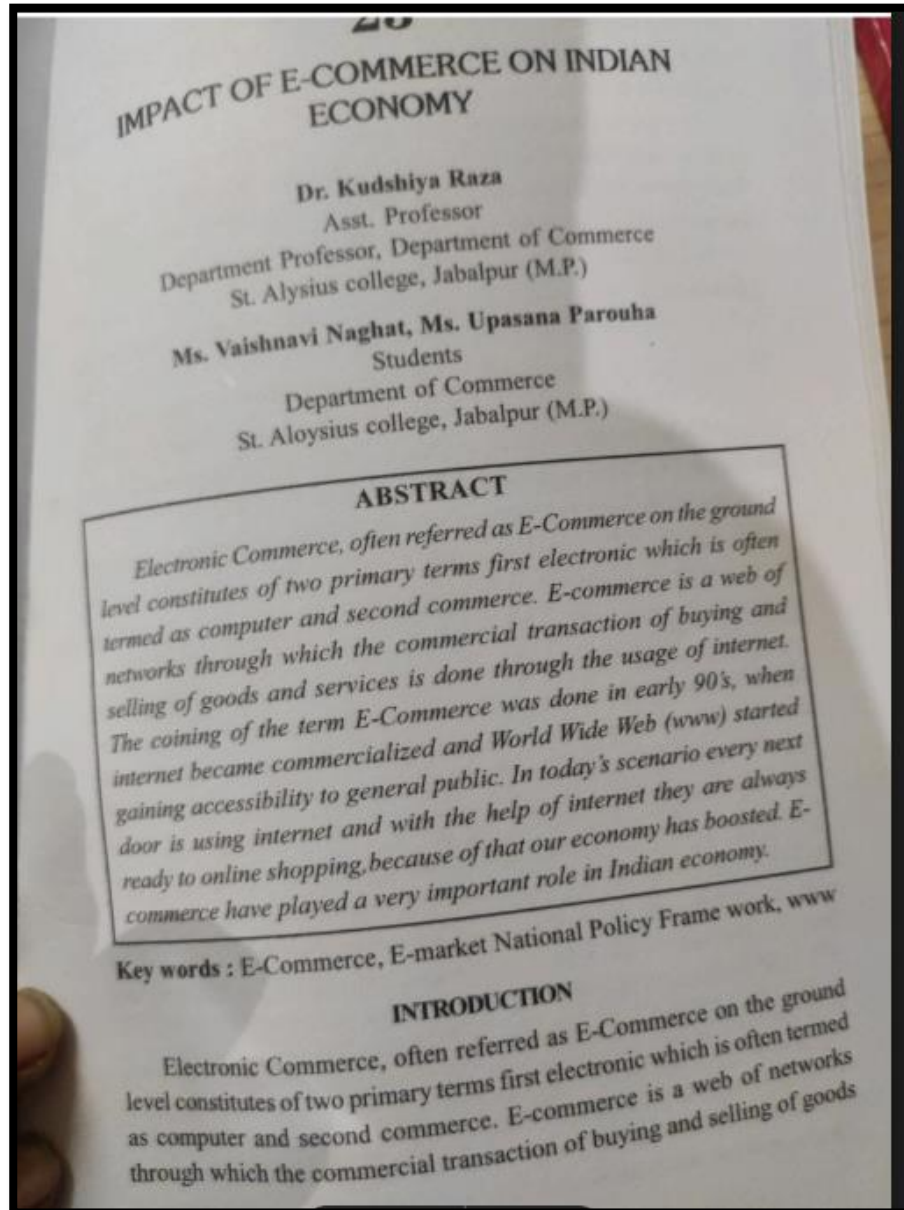
ST. ALOYSIUS' COLLEGE

(AUTONOMOUS), JABALPUR(M.P.)

Reaccredited 'A+' Grade by NAAC (CGPA 3.68/4.00)

College with Potential for Excellence (CPE) by UGC

DST-FIST Supported & Star College Scheme by DBT.





ST. ALOYSIUS' COLLEGE

(AUTONOMOUS), JABALPUR(M.P.)

Reaccredited 'A+' Grade by NAAC (CGPA 3.68/4.00)

College with Potential for Excellence (CPE) by UGC

DST-FIST Supported & Star College Scheme by DBT.



The leaves of knowledge

(A Compilation of Summaries of
Keynote Speeches)

Webinar Organizer

Principal Dr. Betkar M. M.

Editor:

Prof. Dr. Prakash Karad
Shri Kumarswami Mahavidyalaya,
Ausa, Latur, MS, INDIA

The leaves of knowledge - ISBN 978-93-91689-49-0

48

**Prospects of CSR in Higher
Education**

**Dr Tarvinder Kaaur,
Jabalpur, Madhya.**



Why CSR:

India is developing country so far Indian education system is not so developed. Today education faces the rising challenges of standardized testing, strained budgets teacher retention and global workforce competition. Businesses have begun to take a more targeted approach in their corporate social responsibility programs and are seeking to impact areas that have a correlation with their own business goals. For many businesses, education is an important part of their plans, since the needs exist in all geographic areas, across all subject areas and for all kinds of people.

The purpose of CSR:

The purpose of CSR is to encourage businesses to focus on having a positive impact in the social order through promoting sustainable growth. Furthermore, India is among the few countries in the world that have mandated CSR which is a great way to engage with the society. CSR in Higher Education is an emerging concept. Since number of corporate have recognized their responsibilities towards society and also identified this as distinguished contribution towards socio-economic development of the nation, by believing in the greater cause of education & employment.

Industry academia partnership:

CSR refers to ensuring the success of a business by the inclusion of social and environmental considerations into a Company's operations. It means satisfying your customers' demands as well as managing the expectations of other people such as employees, suppliers and the community around you. Means contributing positively to society. This support of corporate sector creates a new vision for Industry Academia partnership which linked with various advantages in terms of Industry ready engineers.

CSR Approaches to Higher Education in India:

At the rate with which the globalization is impacting the world economies, education continues to be at the realm of deciding factors for the growth of the economies. This comes at a time when the role of higher education institutions is

The leaves of knowledge - ISBN 978-93-91689-49-0

7



ST. ALOYSIUS' COLLEGE

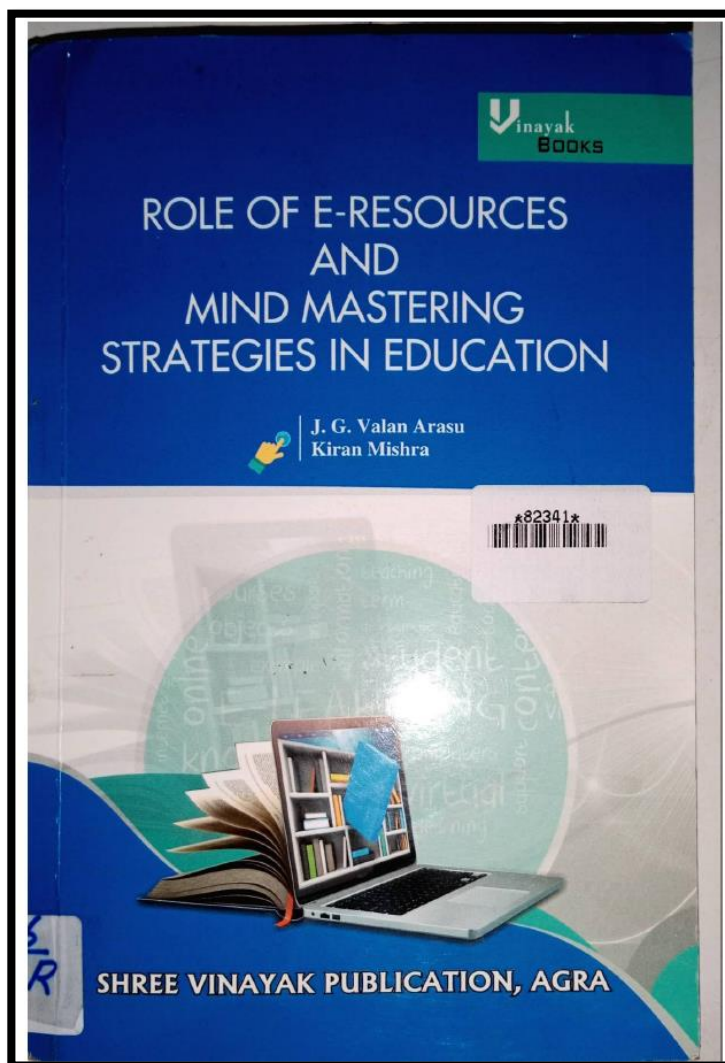
(AUTONOMOUS), JABALPUR(M.P.)

Reaccredited 'A+' Grade by NAAC (CGPA 3.68/4.00)

College with Potential for Excellence (CPE) by UGC

DST-FIST Supported & Star College Scheme by DBT.

Chapters in Book Role of E-resources and Mind Mastering Strategies in Education with ISBN No : 978-93-91267-24-7



Publisher
SHREE VINAYAK PUBLICATION
(Educational Book Publisher)
229, Shastripuram, Sikandra, Agra-282007 (U.P.)
Contact : 9412458170, 9893635398
Email : info@vinayakpublishers.com
shreevinayakpublication2009@gmail.com

Visit us : www.vinayakpublishers.com

© Editors

First Edition : 2021

Code : R0181

ISBN : 978-93-91267-24-7

Price [India ₹ 499
Abroad USD \$ 11.8

Type setting & Printing
Shree Vinayak Publishing Unit, Agra

No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system of transmitted, in any form or by any means, mechanical, photocopying recording, or otherwise, without prior written permission of the publisher. Vinayak has obtained all the information in this book from the sources believed to be reliable and true. However, Vinayak or its editors or Author don't take any responsibility for the absolute accuracy on any information published and the damages or loss suffered thereupon. All disputes subject to Agra (UP) Jurisdiction only.

For Further information about the books published by vinayak log on to www.vinayakpublishers.com or email to shreevinayakpublication2009@gmail.com



ST. ALOYSIUS' COLLEGE

(AUTONOMOUS), JABALPUR(M.P.)

Reaccredited 'A+' Grade by NAAC (CGPA 3.68/4.00)

College with Potential for Excellence (CPE) by UGC

DST-FIST Supported & Star College Scheme by DBT.

14 To Endorse The use of E-resources in Teaching Learning and Research

Zareen Baksh

Abstract

In modern era E-resources became essence of every intellectual movement of higher education. Realizing the importance of the e-resources most of the Universities and Colleges in India liberally investing to provide access to these resources to support learning, teaching and research. A well traditional library is important for any educational institution and ICT is one of the important parts of it in this digital world. Education is one major sector which has undergone the influence of innovations in ICT. Starting from providing online content service, platform for organizing learning experiences to managing learning and assessment has been changed greatly by ICT developments. Students, teachers and educational administrators and stakeholder in education have been benefitted by the integration of ICT in education. The e-resources like CD-ROM database, online journals, online books, OPACs and the internet, are gradually replacing the significance and practice of print media. It is vital that one should be well-known with the use of e-resources for their swift and helpful usage for endorsement of intellectual excellence and research.

Key Words ICT, E-resources, Online Journal, and Online Books

Introduction

Now a day's libraries are changing from traditional document oriented environment to electronic environment. The expectations of library users are also changing & they becomes more dependent upon electronic document than the traditional one. In modern days, more resources are available in electronic formats. So, to keep pace with changing environment and demands libraries should include e-resources on collection development policy. E-resources buildings are a new trend in the information world. It has generated a lot of debate over, its access, storage, organisation, copyright etc. It is still evolving & the future will decide its shape, upon which the future of the libraries also depends. In order to make e-resources/digital resources service environment library and information professionals have to cop-up with the challenging environment and they should have developed the expertise in managing the e-resources and also conserving the digital resources for posterity. The applications of ICT in the realm of libraries have, no doubt, facilitated assistance to libraries in acquisition, storage, and management of collection and in providing various newer services along with the traditional services. However, the changing environment warrants new efforts to promote the



ST. ALOYSIUS' COLLEGE

(AUTONOMOUS), JABALPUR(M.P.)

Reaccredited 'A+' Grade by NAAC (CGPA 3.68/4.00)

College with Potential for Excellence (CPE) by UGC

DST-FIST Supported & Star College Scheme by DBT.

8

Igniting Mind Power to Master Skills that Drive Performance

Elena Philip & Anjali D'Souza

Abstract :

The human mind possesses extraordinary powers. This power gives us the control that we have on our lives and our thoughts. Our thoughts create the reality around us. It is only when we make the extra effort of comprehending our mind power that we can actually decide to control our thoughts, instead of our thoughts controlling us. Through the disciplined development of our mental habits, we allow our fullest potential and ability to express itself without interference or constraint. Thus, to master work in any area, one must learn first to master one's own mind. Individual mind power is all that is required to create and experience the kind and quality of life that individuals desire. By understanding this power and establishing a conscious awareness of the immutable and unwavering universal laws and spiritual principles that oversee and govern the entire process of creation and support ability to do one can begin to develop the awareness of and benefit from an infinite supply of wisdom, knowledge and power which is equally available to all. Individuals will be able to harmonize the visions, hopes, dreams and desires that they hold only when they keenly and consciously become aware of this fact and make a conscious and intentional choice to discover how to utilize the limitless creative power that one possesses. To be human is to live our highest potentials. With a life full of possibilities, one has the potential to keep building on one's progress and laying a foundation for the best. To achieve excellence and be successful we must ignite and align our mind power to harness potential and mastering skills that drive performance.

Key words : Mind power, Mastering oneself, Performance, Potential, Determination, Commitment, Skills, Realization of goals, Excellence, Success.

"Every human mind is a great slumbering power until awakened by keen desire and by definite resolution to do." Edgar. F. Roberts

Introduction

The human mind is the most powerful tool known to man. Even the most advanced supercomputer in the world would not exist if not for the brain power of the engineers and creators behind it. But the powers of the mind stretch far beyond the cognitive ability to create technological wonders. The true wonder comes in the powers that give humans hopes and dreams, focus and determination. The human mind has always been an object of great astonishment. A tremendous amount of research has been done to understand



ST. ALOYSIUS' COLLEGE

(AUTONOMOUS), JABALPUR(M.P.)

Reaccredited 'A+' Grade by NAAC (CGPA 3.68/4.00)

College with Potential for Excellence (CPE) by UGC

DST-FIST Supported & Star College Scheme by DBT.

23

E-Learning in India During Covid-19; Prospects and challenges

Vishwas Patel & Tuhina Johri

Abstract

COVID -19 pandemic has disrupted the everyday life of people across the world, the virtual world has come to the rescue. It has worked as a mechanism for the educational institutions to grow and opt for platforms with technologies, which have not been used before. In the current scenario of COVID 19 pandemic, the contribution of information technology has gained momentum due to closure of educational institutions that raises challenges for students' learning.

The Indian educational system needs to change from the traditional approach and take on digital methods. Every challenge opens up a new opportunity. To prevent from the epidemic and in order to minimize and mitigate the impacts of COVID -19, higher educational institutes (HEIs), University Grant Commission (UGC), MHRD, central and state Governments have taken various preventive measures.

The COVID-19 pandemic has shaken the world and a global crisis with significant loss of life and social and economic impacts. It has significantly changed the life of people across the world and affected every sector around the world. It has created the largest turmoil in education systems, affecting nearly 1.6 billion learners in more than 190 countries and all continents. Since the COVID -19 pandemic has disrupted the everyday life of people across the world, the virtual world has come to the rescue. It has worked as a mechanism for the educational institutions to grow and opt for platforms with technologies, which have not been used before. The Indian educational system needs to change from the traditional approach and take on digital methods. Every challenge opens up a new opportunity. In India the federal government as a facet of the countrywide lockdown has closed each academic institution, as a consequence of which, learners going from school going kids to postgraduate college students, are affected. There are currently more than 1.2 billion children in 186 countries affected by academic institution closures due to the epidemic.

The education system was changed and transformed from traditional teaching to digital teaching and the Indian government has launched e-learning program. Though e-learning is not a new concept, but due to global pandemic the whole country going under lockdown shifted the education system into a virtual mode. Nearly 60.2 million school teachers and university lecturers are no longer in the classroom. Many institutions cancel their exams, classes and



ST. ALOYSIUS' COLLEGE

(AUTONOMOUS), JABALPUR(M.P.)

Reaccredited 'A+' Grade by NAAC (CGPA 3.68/4.00)

College with Potential for Excellence (CPE) by UGC

DST-FIST Supported & Star College Scheme by DBT.

29

Role of E-Resources in Covid-19 Pandemic Era

Sushma Pillai

Abstract

"COVID19 has ushered in a time of change and forced paradigm shifts in many areas. It has forced us to rethink the traditional school model and question the way we teach."

E-resources are rich source of information for those students who want extra learning materials in addition to their regular classroom activities. Higher education system has grown exponentially in the last five decades and e-resources have become an inseparable part of this educational system. E-resources have a prominent role to play in supporting higher education and in fulfilling educational objectives. Electronic resources are materials in digital format accessible electronically. An electronic resource is defined as a resource which require computer access or any electronic product that delivers a collection of data, be it text referring to full text bases, electronic journals, image collections electronic resources are materials in digital format accessible electronically. Has potential to provide access to literally thousands of e-articles, e-books, online newspapers, magazines and more, which is far more than a library could possibly subscribe in print format. It is possible to find related studies while searching internet, as most online databases provides citation links to the particular study In response to the current situation, educators have been instrumental in finding new ways to ensure learning continues for children by developing online and offline learning materials; We also need to acknowledge that the transition to virtual learning can be challenging for all stakeholders. Parents will have to think differently about how to equip their children in the virtual learning space;

Key Words : E-Resources, Covid 19

Introduction

It is a fact that a modern teacher has to play a variety of roles apart from that of an academic instructor. Electronic resources form one of many formats that the library collects to support its universal collections. The Recommending Officer responsible for the appropriate subject, language, geographic area, or format is responsible for recommending electronic resource. An "electronic resources" is defined as any work encoded and made available for access through the use of computer. It includes electronic data available by (1) remote access and (2) direct access (fixed media). In other words: Remote access (electronic resources) refers to the use of electronic resource via computer



ST. ALOYSIUS' COLLEGE

(AUTONOMOUS), JABALPUR(M.P.)

Reaccredited 'A+' Grade by NAAC (CGPA 3.68/4.00)

College with Potential for Excellence (CPE) by UGC

DST-FIST Supported & Star College Scheme by DBT.

27

A Study of Transcendental Meditation Technique to develop the Mental Abilities and Academic Performance of the Students

Meeta Agrawal

Abstract :

In the whole world, inadequacy of education is acutely obvious. At different levels of education, the problems of dullness, school drop-outs, antisocial behavior, and lack of motivation are found. So to enlighten the life of humans from the era of darkness to light has been trying to detail by following the technique i.e., Transcendental meditation in this paper. To up heal the development and to increase the academic performance of students this technique is very useful in the life of the students which has been used from the ancient times.

Key Words : Stress, Mental Abilities, Academic Performance, Creativity

Introduction

A Teacher needs to understand and should have proper study of the behavior of students for guiding them about their proper growth and development as well as planning and organizing their activities. The task of studying behavior requires collecting various types of information and data regarding the students. A teacher has to be quite alert in making selection and choice of one or the other suitable methods and techniques for collecting one or another information or data about a specific student. Different approaches, methods and techniques have been used by the facilitator to assess the student's performance. But, in the modern era of 21st century students are not physically interested to work, not playing a lot of outdoor games in the school as they are more indulge in indoor activities and aware about computer technology which makes their life mentally dull and tedious.

Review Literature

AMA Journal: The American Medical Association's journal, *Achieves of Internal Medicine*, published a major study in August of 2006 showing the *Transcendental meditation* technique significantly reduces risk factors for hypertension, diabetes and obesity. (The AMA has also provided Continuing Medical Education (CME) credit to physicians studying the health benefits of the Transcendental Meditation Technique.)



ST. ALOYSIUS' COLLEGE

(AUTONOMOUS), JABALPUR(M.P.)

Reaccredited 'A+' Grade by NAAC (CGPA 3.68/4.00)

College with Potential for Excellence (CPE) by UGC

DST-FIST Supported & Star College Scheme by DBT.

19

Mastering the Mind : The Effects of Mindfulness in Regulating Stress Responses

Seema Potphode

Abstracts

"Our life is the Creation of our Mind," according to Buddhist scripture. Buddhist philosophy developed an entire science of training the unruly mind to help anyone overcome its constant fluctuations to achieve stillness, and eventually, enlightenment. It can be challenging to stay collected in the face of frustrations, but reacting often makes things worse. Here's how mindfulness can help you stay in control. This paper, composed by an interest of author based in Mastering the Mind presents some background to the practice of Mindfulness. We address the empirical evidence for these therapies, the principles through which they might operate mindfulness and some considerations relevant to the conduct and interpretation of article into the therapeutic application of mindfulness.

Mastering our thoughts can be one of the hardest, yet most rewarding tools towards experiencing truly fulfilling lives. It is possible to be the master of your own mind, but how often do you implement your phenomenal power do to so? The quality of our thoughts determines the quality of our lives. An important element of mastering mindfulness and regulating the stress response is our perception of stress. How do to optimize stress, and the effects of mindfulness in regulating stress responses. They found that how people respond to the stressors they face is a key determinant of health and well-being. Your mind holds the power to help you succeed in any area of life, but without a mindset focused on growth, that power can stay locked away. Here are some thought, easy to implement ways to stay on the exhilarating. For mastering your mind author suggests some technique which improve your attention, stress, and emotions.

Keywords : Mastering the Mind, Mindfulness, Attention, Stress, Emotion

Introduction

An important element of mastering mindfulness and regulating the stress response is our perception of stress. Author at the Stanford Mind and Body Lab study the effects of stress, how to optimize stress, and the effects of mindfulness in regulating stress responses. They found that how people respond to the stressors they face is a key determinant of health and well-being. Developing growth mindfulness has become a popular topic in recent years, as people have realized its huge impact on success potential. But, getting



ST. ALOYSIUS' COLLEGE

(AUTONOMOUS), JABALPUR(M.P.)

Reaccredited 'A+' Grade by NAAC (CGPA 3.68/4.00)

College with Potential for Excellence (CPE) by UGC

DST-FIST Supported & Star College Scheme by DBT.

10 | Shree Vinayak Publication

1

Online Teaching Learning : Challenges and Opportunities in Education

Kiran Mishra

Abstract

The whole educational system from elementary to higher level has been collapsed during the lockdown period of the novel corona virus disease 2019 (COVID-19) not only in India but across the globe. This study is a portrayal of online teaching-learning modes adopted by the Different Educational institute for the teaching-learning process. The intended purpose of this paper seeks to address the required essentialities of online teaching-learning in education amid the COVID-19 pandemic and how can existing resources of educational institutions effectively transform formal education into online education with the help of virtual classes and other pivotal online tools in this continually shifting educational landscape and how the COVID-19 creates the challenges and opportunities in front of education.

Keyword : Online teaching-learning modes, COVID-19 Pandemic, online education

Introduction

COVID-19 is the disease caused by a new corona virus called SARS-CoV-2. WHO first learned of this new virus on 31 December 2019. The corona virus triggered the first phase nationwide lockdown in India which began on March 25, 2020, for 21 days and subsequently repeated on April 15, 2020, for 19 days as the second phase; on May 04, 2020, for 14 days as the third phase; on May 18, 2020, for 14 days as the fourth phase and on June 01, 2020, only for containment zones taking 16 days. To get control over COVID-19 pandemic is possible to a greater extent with people's unbridled determination of the stringent precautionary measures such as maintaining social distancing, following medically instructed quarantine process and embracing hygiene and sanitization.

The impact of pandemic COVID-19 is observed in every sector around the world. The education sectors of India as well as world are badly affected by this. It has enforced the world wide lock down creating very bad effect on the students' life. Around 32 carors learners stopped to move schools colleges, all educational activities halted in India. The outbreak of COVID-19 has advised us that change is inevitable. It has worked as a catalyst for the educational institutions to grow and opt for platforms and techniques, which



ST. ALOYSIUS' COLLEGE

(AUTONOMOUS), JABALPUR(M.P.)

Reaccredited 'A+' Grade by NAAC (CGPA 3.68/4.00)

College with Potential for Excellence (CPE) by UGC

DST-FIST Supported & Star College Scheme by DBT.

3

Music As Mind Mastering Tool

Shridhar Nagraj & Tapsi Nag

Abstract

In these crucial times, we all have encountered various issues which we never thought of. Pandemic has taught all of us the other way /aspects of living. One very important skill every individual tried and grabbed is to keep ourselves calm, adaptable and master our emotions. When we talk about mastering our emotions, there are plenty of practices which we as humans rely on and each of it has a specific benefit. One prominent benefit can be seen is that we are evolving to be a better person on emotional and personal grounds. Music is one such tool which has been accepted universally and proven to be effective in development of emotional and mental wellbeing. Pandemic is one such global shift, where people have understood the importance of taking care of mental and physical wellness. Having maximum control over our mind and thoughts came up as a new resolution.

How music leads to mind mastering?

As a human when we talk about our mental wellbeing we come across various methods or processes. One basic function to be taken care of is to unblock our **Chakras**. Chakras play an important role in the flow of the energy in our body which end up affecting our emotional and mental wellbeing.

To understand this let's talk about how chakra refers to the energy centers we have in our body. There are 7 Chakras in our body, all of which have specific locations and functions. And music has a unique approach towards each Chakra and its functioning.

Muldhara Chakra (Root) : Root Chakra connects us to comfort, Survival, Safety, Grounding. When this chakra is blocked, we human tend to be insecure and worried. There are different elements present in each chakra. Root chakra has an Earth element in it and denoted in red color. This chakra protects Roots of the body and through meditation; practicing yoga can unblock this Chakra

Swadhishtana Chakra (Sacral) : This Chakra protects and enhances creativity and sociability. This water element chakra helps us eradicate fear of intimacy and social anxiety. During pandemic people around world have experienced social anxiety. Unblocking our **Sacral Chakra** can uplift the way of living and helps to be more creative.



ST. ALOYSIUS' COLLEGE

(AUTONOMOUS), JABALPUR(M.P.)

Reaccredited 'A+' Grade by NAAC (CGPA 3.68/4.00)

College with Potential for Excellence (CPE) by UGC

DST-FIST Supported & Star College Scheme by DBT.

16

Role of E-Resources and Mastering Strategy in Education India : Prospects and Challenges

Antonima K. K.

Abstract

The education system of India is extremely ancient and run through civilizations. E-Learning is the use of technology to enable people to find out anything, anywhere at any time. It includes all sorts of electronically supported learning and teaching, including educational technology. Developments in internet and multimedia technologies are the essential enabler of E-learning. Education plays key role in enhancing the Social and economic development of the nations all over the world. Higher education sectors implements E-learning as vital component to facilitate the knowledge acquisition and to face up to the fast growing competition and technology. The paper discussed about the role of E-resources in education system in India.

Keywords : Education, E-resources, Educational Technology.

Introduction

India is a country with largest population which successively is taken into account as valuable resource. The education system of India is extremely ancient and filed with enigma and inconsistency but still, it is believed that by 2030 India will be the nation which contains youth as its population in the world with more number of college-going pupil and currently it is in third position after China and the US. E-Learning is that the use of technology to enable people to find out anything, anywhere at any time. It includes all sorts of electronically supported learning and teaching, including educational technology. Developments in internet and multimedia technologies are the essential enabler of E-learning. It is commonly thought that new technologies can make an enormous difference in education. Education plays a key role in enhancing the Social and economic development of the nations all over the world. Higher education sectors implements E-learning as vital component to facilitate the knowledge acquisition and to face up to the fast growing competition and technology. Along with ICT, development of multimedia had brought changes in the traditional way of teaching.

E-Learning has a significant role in transforming knowledge, skill and performance improvement of the higher education. E-learning refers to the utilization of ICTs to reinforce and support teaching and learning processes.



ST. ALOYSIUS' COLLEGE

(AUTONOMOUS), JABALPUR(M.P.)

Reaccredited 'A+' Grade by NAAC (CGPA 3.68/4.00)

College with Potential for Excellence (CPE) by UGC

DST-FIST Supported & Star College Scheme by DBT.

12

Impact of Global COVID-19 Pandemic on Migration of Labour in Madhya Pradesh An Overview

Dr Renu Markande, Dr. Anthoniama K.R.

Abstract :

This article discussed some of the important issues regarding the effect of epidemics like COVID-19 on the migrant population. The impacts are most troubling for low-income households, which are well positioned to cope with earnings losses during a recession, but have no alternative earnings and have no social security available. Many of these workers earn little more than a subsistence wage and have no other means to protect their incomes if they lose their jobs. Migrant workers constitute quite a large proportion of such vulnerable population. Millions of migrant workers are anticipated to be unemployed in India due to the lockdown and subsequent recession. Many of the migrant workers have returned to their villages and many more are just waiting for the lockdown to be lifted. This is particularly higher for those who are working in unorganized sectors and those who do not have written contracts, or those whose contracts are at the verge of completion. The lockdown and the subsequent recession are likely to first hit contract workers across many industries. The main objectives of the paper to find out the effect of a labour on bases of earning and employment in Madhya Pradesh.

Keywords : Migration, Covid-19, Labour force, Lockdown, Recession.

Introduction : This paper examines the effect of the COVID-19 pandemic and its associated nationwide lockdown on internal migration. As of 12 September 2020, India had recorded 958,316 active cases and 77,472 deaths (Ministry of Health and Family Welfare 2020a). The spread of this highly contagious disease prompted the Government of India to implement a nationwide lockdown on the 24 March, with strict restrictions on mobility and transportation links summarized overnight.



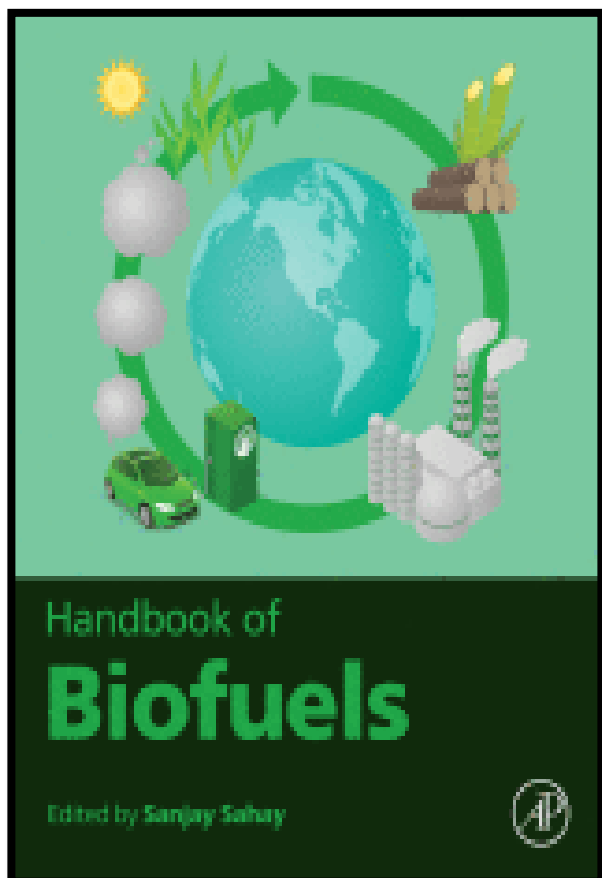
ST. ALOYSIUS' COLLEGE

(AUTONOMOUS), JABALPUR(M.P.)

Reaccredited 'A+' Grade by NAAC (CGPA 3.68/4.00)

College with Potential for Excellence (CPE) by UGC

DST-FIST Supported & Star College Scheme by DBT.



ACADEMIC PRESS

Handbook of Biofuels
2022, Pages 593-604

Chapter 31 - Nanotechnological interventions in biofuel production

Enosh Phillipps

Show more ▾

+ Add to Mendeley Share Cite

<https://doi.org/10.1016/B978-0-12-822810-4.00031-2> [Get rights and content](#)

Abstract

Alternative fuels are taking accelerated steps toward overpowering traditional fuels for meeting energy demands. The low-carbon energy nature of biofuel makes it of higher priority due to climate change and increasing CO₂ emissions from traditional fuels. Both the developing and industrialized nations have serious considerations for developing technologies for biofuel production. *It can be clearly seen that the United States is the leader in biofuel production and stalls high as compared to any other nation.* The issue of food security related to biofuel production is much more complex than anticipated in the past and requires deeper commitments for making policies regarding agriculture and export. Nanotech has emerged as one of the very handy tools for enhancing biofuel production and providing cost-effective and process-optimized methods of biofuel production. Nanoparticles have been used for enzyme immobilization, harvesting microalgae, and the development of photocatalysts. Cellulose, which in itself is a raw material for biofuel production, has been employed for nanostructured cellulose as it



ST. ALOYSIUS' COLLEGE

(AUTONOMOUS), JABALPUR(M.P.)

Reaccredited 'A+' Grade by NAAC (CGPA 3.68/4.00)

College with Potential for Excellence (CPE) by UGC

DST-FIST Supported & Star College Scheme by DBT.

25

Online Learning : A Universal Remedy in the Time of Covid-19 Crisis

Manju Maria Solomon

Abstract :

The Covid-19 pandemic and the social distancing that followed have affected all walks of society, also education. In order to keep education running, educational institutions have had to quickly adopt to situation. This situation challenged the education system across the world and forced educators to shift to an online mode of teaching overnight. Many academic institutions that were earlier reluctant to change their traditional pedagogical approach had no option but to shift entirely to online teaching-learning. The article includes the importance of online learning. Challenges and analysis of e-learning modes in the time of crisis. This article also put some light on the growth of EdTech Start-ups during the time of pandemic and includes suggestions for academic institutions of how to deal with challenges associated with online learning.

Keywords : corona virus, COVID-19, education, online learning, technology, EdTech

Introduction

The Covid-19 pandemic raging around the globe has caused large-scale institutional and behavioral 'shock effects' in various areas of human activity including education. The impact on learners is unprecedented: on 9 April 2020, there are over 1,500,000,000 students worldwide from primary to tertiary level who cannot attend school (UNESCO 2020) Covid-19 has deeply affected the global economy. This tragedy has also shaken up the education sector, and this fear is likely to resonate across the education sector globally. The Covid-19 pandemic outbreak forced many schools and colleges to remain closed temporarily. Several areas are affected worldwide and there is a fear of losing this whole ongoing semester or even more in the coming future. Various schools, colleges, and universities have discontinued in-person teaching. As per the assessment of the researchers, it is uncertain to get back to normal teaching anytime soon. As social distancing is preeminent at this stage, this will have negative effects on learning opportunities. Educational units are struggling to find options to deal with this challenging situation. These circumstances make us realize that scenario planning is an urgent need for academic institutions (Rieley, 2020). This is a situation that demands



ST. ALOYSIUS' COLLEGE

(AUTONOMOUS), JABALPUR(M.P.)

Reaccredited 'A+' Grade by NAAC (CGPA 3.68/4.00)

College with Potential for Excellence (CPE) by UGC

DST-FIST Supported & Star College Scheme by DBT.

22

Bloom's Digital Taxmonomy and Online Education

Mandira Kar

"Education is the most powerful weapon which you can use to change the World"
—Nelson Mandela

Abstract

A nation's prosperity, progress, and power depend on its creative manpower developed through skills, knowledge, attitude and values imparted in a systematic and scientific manner. Education is the foundation stone of every nation is thereby definitely not an overstatement.

Covid-19 pandemic and the resulting preventive measures have upended the lives of students, parents and teachers and consequently online education stood as the only evident solution. This technology mediated education has its own challenges especially when today's learner does not lack information. Educators are therefore duty bound to assist the learners to organize the vast data available on cyber space into meaningful knowledge.

There are various conventional styles of teaching-learning, none the less a new pedagogical mode known as the Flipped teaching-learning style emerged that made online instruction delivery more meaningful. Here the learners were introduced to the study material before class and the classroom time was used to deepen their understanding via class activities.

In this paper the author stresses on applying Bloom's revised taxonomy of e-learning for educators to achieve their objectives, as true education involves learning psychology and behavioral analytics apart from content delivery and assessment to measure the progress of the learner. Bloom's digital taxonomy is now coined supports educators to navigate through numerous digital tools and applying the right tool to the right learning objective.

Teachers' today need to embrace the digital education pedagogy and they also should be provided the necessary training.

It would be inappropriate to state here that conventional educational model will be obsolete, but for its survival a blend of classroom and online mode is the norm.

Education is the process of imparting knowledge, values, skills and attitudes. It has enormous benefits ranging from individual prosperity to enhanced national GDP, gender equality to women empowerment and sanitation and environmental awareness. It helps one to gain more opportunities and achieve better in personal and professional life. In fact it is the most influential mechanism that can change the world.



ST. ALOYSIUS' COLLEGE

(AUTONOMOUS), JABALPUR(M.P.)

Reaccredited 'A+' Grade by NAAC (CGPA 3.68/4.00)

College with Potential for Excellence (CPE) by UGC

DST-FIST Supported & Star College Scheme by DBT.

9

Effect of Lockdown Due to Covid-19 on Mental Health Status on College Students of Madhya Pradesh

Priyanka Sinha, Runa Paul & Yasmin Banu

Abstract

Mental health of the students is the topic of interest through out the world. The whole performance of the student depends on their mental health. Till date there is no proven treatment to manage the Novel corona virus disease. As the rate of spread is increasing day by day, lockdown is the only option available to slowdown the rate of spreading the infection. The examinations were postponed due to the lockdown effect and the actual date of exam is awaited. In this context many students were undergoing mental stress and there is a strong need to consider their mental health status. From this study we found that the effect of lockdown very high on students mental health. But there are less impact on those students who regular associated with online classes. The internet facility is very big problem in villages and few places. Students are unable to join online classes and their stress and depression level is very high.

Key words : Covid 19, Mental health, Madhya Pradesh

Introduction

Mental health issues are the leading impediment to academic success. Mental illness can affect students' motivation, concentration, and social interactions—crucial factors for students to succeed in higher education [1]. The 2019 Annual Report of the Center for Collegiate Mental Health [2] reported that anxiety continues to be the most common problem (62.7% of 82,685 respondents) among students who completed the Counseling Center Assessment of Psychological Symptoms, with clinicians also reporting that anxiety continues to be the most common diagnosis of the students. In 2018, slightly over 50% of students reported anxiety as the main reason for seeking services. Despite the increasing need for mental health care services at postsecondary institutions, alarmingly, only a small portion of students committing suicide contact their institution counseling centers [3], perhaps due to the stigma associated with mental health. Such negative stigma surrounding mental health diagnosis and care has been found to correlate with a reduction in adherence to treatment and even early termination of treatment [4].



ST. ALOYSIUS' COLLEGE

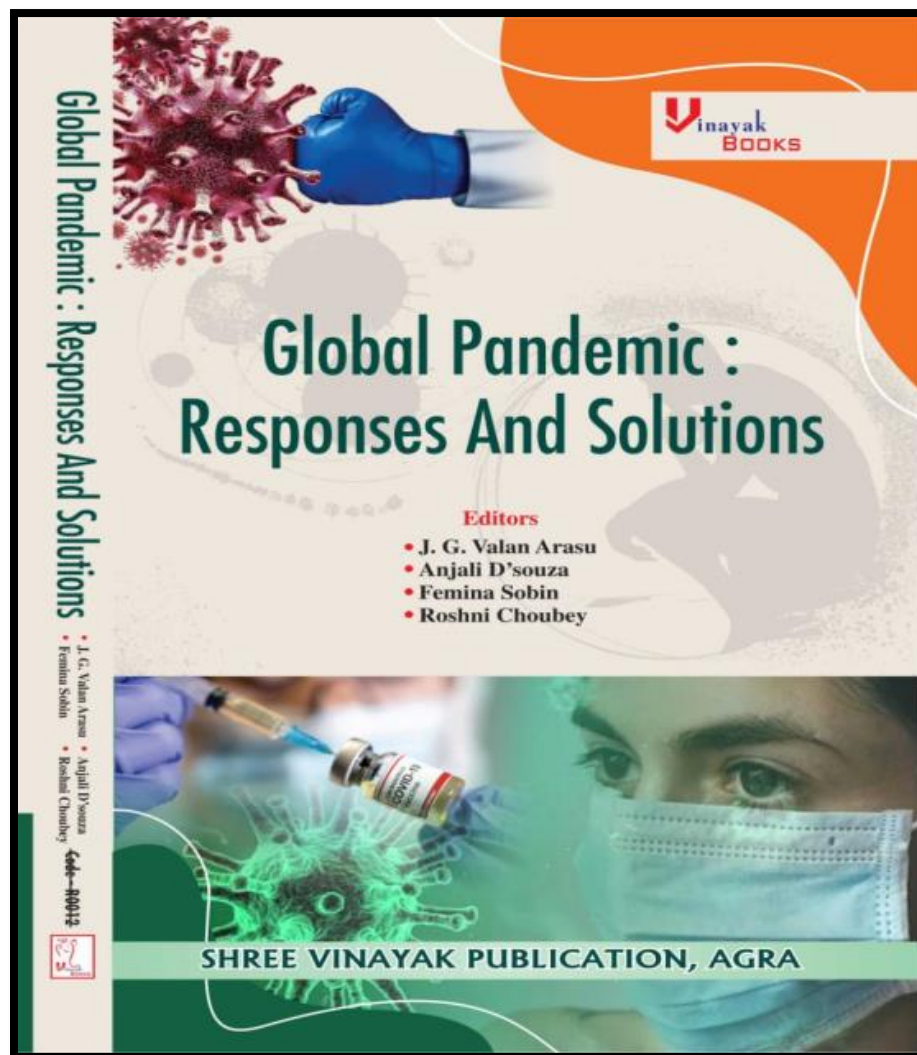
(AUTONOMOUS), JABALPUR(M.P.)

Reaccredited 'A+' Grade by NAAC (CGPA 3.68/4.00)

College with Potential for Excellence (CPE) by UGC

DST-FIST Supported & Star College Scheme by DBT.

Chapters in Book Global Pandemic : Responses and Solutions with ISBN No: 978-93-91267-07-0





ST. ALOYSIUS' COLLEGE

(AUTONOMOUS), JABALPUR(M.P.)

Reaccredited 'A+' Grade by NAAC (CGPA 3.68/4.00)

College with Potential for Excellence (CPE) by UGC

DST-FIST Supported & Star College Scheme by DBT.

Global Pandemic : Responses and Solutions | 159

20

COVID-19 Pandemic and Student's Life

Roshni Choubey

ABSTRACT

Introduction

The outbreak of COVID-19 affected all aspects of human activities globally ranging from education, research, sports, entertainment, transportation, worship, social gathering/interactions, economy, businesses, and politics. Indeed, the entire world was in distress as a result of COVID-19 threats, the reality of the situation was challenging to bear, and the education sector remains one of the worst-hit by Coronavirus outbreak (Edeh Michael Onyema et al, 2020).

First and foremost, the COVID-19 pandemic is a public health emergency. Many nations have agreed to shut schools, colleges, and universities (for the right reasons). The epidemic encapsulates the challenge that politicians face in deciding whether to close schools (to reduce interaction and save lives) or to leave them open (allowing workers to work and maintaining the economy). School closures impact not only students, teachers, and families, but have farreaching economic and societal consequences (Cambridge assessment, 2020). Many households are affected by the extreme short-term damage. In an untested and unparalleled scale, education is going online. Student tests are now going online, resulting in a lot of trial and error and confusion for those concerned. Many tests have been cancelled outright. Importantly, these disruptions would not just be a short-term problem, but they will also have long-term repercussions for the impacted cohorts, increasing inequalities (Simon B). The pandemic has exposed the shortcomings of the current higher education system and the need for more training of educators in digital technology to adapt to the rapidly changing education climate of the world (Shazia Rashid and Sunishtha Singh Yadav, 2020).

Students' lives have been affected in numerous ways as a result of the COVID-19 pandemic, depending not just on their degree and course of study, but also on where they are in their programmes. Many that are transitioning from one stage of their schooling to another, such as from school to tertiary education or from tertiary education to jobs, face unique challenges. They will be unable to complete their school curriculum and assessments in the usual manner, and in many cases, they will be separated from their peer circle



ST. ALOYSIUS' COLLEGE

(AUTONOMOUS), JABALPUR(M.P.)

Reaccredited 'A+' Grade by NAAC (CGPA 3.68/4.00)

College with Potential for Excellence (CPE) by UGC

DST-FIST Supported & Star College Scheme by DBT.

186 | Shree Vinayak Publication

24

Comparative study of in vitro cytotoxicity of Phenyl, Gonyl & Some branded disinfectant on Human Peripheral blood Lymphocytes using MTI Assay

Daya Shankar Gautam, Kahkashan Naz, Saraswati Mishra,
Prahlad Marskole, Nisha Tiwari Anjali Kumari,
Sakshi Dwivedi, Rita Bhandari

Abstract

Phenyl, Gonyl, and some branded products are being used as disinfectants now a day. This study has been designed to test the comparative cytotoxicity of these products on human lymphocytes as Humans/ Cleaning workers are directly exposed to these disinfectants while cleaning process. Phenyl, Gonyl and two branded disinfectants were purchased from the market. MTT assay was used to find the cytotoxicity of these products on Human peripheral blood lymphocytes (PBL) for the study. It was found that when we compared all the readings, the potential of Phenyl for cytotoxicity was found to be lesser than that of Gonyl and branded products. Phenyl may be used for cleaning purposes which is safer than others. We also recommend that precautions (Wearing gloves and masks) should be taken while using it as it has got some toxic potential against micro-organisms.

Introduction

Disinfectant: Disinfection is the killing or removal of those agents, which cause infection. A disinfectant is therefore, a germicide. Disinfectant substances are employed to neutralize the action of pathogenic organisms and to prevent the spread of contagious or infectious diseases. The efficacy of any disinfectant is based on its power of destroying or of rendering inert, specific poisons or disease germs.

Chemically phenol and phenolic compounds are very effective disinfectants. A 5% aqueous solution of phenol rapidly kills the vegetative cells of microorganisms whereas spores are resistant. Many derivatives of phenol have been prepared and evaluated for their antimicrobial activity.

According to the National Institutes of Health, phenol is toxic and people who are hypersensitive to it could experience death or serious side effects at very low exposures. Plus, it is rapidly absorbed and can cause toxicity throughout the entire body. Typically, death and severe toxicity result from phenol's effects on the central nervous system, heart, blood vessels, lungs



196 | Shree Vinayak Publication

25

Phytochemical Analysis and Antibacterial Activity of *Annona squamosa* Twigs Extract Against *Aeromonas Hydrophila*

Runa Paul, Asha Khanna, Rita Bhandari, Akundi Dhananjay

ABSTRACT

Plant-derived medicines have great promise in the treatment of infectious diseases since the beginning of human civilization. *Annona squamosa* (L) plants have immense medicinal value and pharmacological properties. The plant promotes various activities such as growth promotion, anti-stress, appetite stimulation, immunostimulation and antimicrobial properties. This is due to the presence of bioactive substances such as phenols, alkaloids, flavanoids, steroids, terpenoids and essential oils.

The present study was undertaken to assess the invitro - anti-bacterial activity of the successive aqueous twigs extract of *Annona squamosa* of different concentration (25mg/ml, 50mg/ml, 75mg/ml and 100mg/ml) against *Aeromonas hydrophila* (gram negative bacterial strain) using zone of inhibition. Agar well diffusion method was used to evaluate the antibacterial efficiency.

The most efficient inhibitory activity was examined in higher concentration (100%) of aqueous twigs extract of *Annona squamosa*. The results reveal that the twigs are a rich source of essential primary and secondary metabolites exhibiting the antibacterial activity.

Keywords: *Annona squamosa*, Antibacterial, Phytochemical screening, Qualitative study, *Aeromonas hydrophila*

1. INTRODUCTION

Fish is an excellent source of animal protein in our diet. In developed and developing countries, a variety of species produced through freshwater fisheries and aquaculture, for protein supply is being encouraged, but in under-developed countries, the rate of fish production is not up to the deserved level and therefore it is declining. Fish culture should be encouraged good alternate for red meat. Analysis reveals that fish flesh includes all the important amino acids and minerals in appropriate concentrations viz., phosphorus, iodine, iron, copper potassium and vitamin A and D. As fish flesh contains low carbohydrate content and unsaturated fat, it serves as a valuable ingredient to a healthy diet (Chandrawanshi 2012). Fishes are palatable and proteineous food for human beings. India was at the threshold of blue revolution in 2012



ST. ALOYSIUS' COLLEGE

(AUTONOMOUS), JABALPUR(M.P.)

Reaccredited 'A+' Grade by NAAC (CGPA 3.68/4.00)

College with Potential for Excellence (CPE) by UGC

DST-FIST Supported & Star College Scheme by DBT.

Global Pandemic : Responses and Solutions | 181

23

Wildlife Destruction : Origin of Pandemic diseases

Priyanka Sinha

Article

Pandemics such as coronavirus are the result of humanity's destruction of nature, according to leaders at the UN, WHO and WWF International, and the world has been ignoring this stark reality for decades.

The illegal and unsustainable wildlife trade as well as the devastation of forests and other wild places were still the driving forces behind the increasing number of diseases leaping from wildlife to humans, the leaders told the Guardian.

Coronavirus is a warning to us to mend our broken relationship with nature

They are calling for a green and healthy recovery from the COVID-19 pandemic, in particular by reforming destructive farming and unsustainable diets.

A WWF report, also published on Wednesday, warns: "The risk of a new [wildlife-to-human] disease emerging in the future is higher than ever, with the potential to wreak havoc on health, economies and global security."

WWF's head in the UK said post-Brexit trade deals that fail to protect nature would leave Britain "complicit in increasing the risk of the next pandemic".

High-level figures have issued a series of warnings since March, with the world's leading biodiversity experts saying even more deadly disease outbreaks are likely in future unless the rampant destruction of the natural world is rapidly halted.

Earlier in June, the UN environment chief and a leading economist said COVID-19 was an "SOS signal for the human enterprise" and that current economic thinking did not recognise that human wealth depends on nature's health.

In 1997, a large area of rainforest in south-east Asia was burned to the ground to make way for palm oil plantations. A combination of deforestation, forest fires and drought are believed to have forced hundreds of fruit bats away from their natural habitats towards fruit orchards planted in close proximity to intensive pig farms. These conditions led to the emergence of the Nipah virus, which spilled over from infected bats to pigs, and from pigs to pig farmers. Over the next two years, the disease would kill more than 100 people. This should have served as a warning.



ST. ALOYSIUS' COLLEGE

(AUTONOMOUS), JABALPUR(M.P.)

Reaccredited 'A+' Grade by NAAC (CGPA 3.68/4.00)

College with Potential for Excellence (CPE) by UGC

DST-FIST Supported & Star College Scheme by DBT.

172 | Shree Vinayak Publication

22

COVID-19 Pandemic : Impact on Environment And Economy

Femina Sobin, Vaishali Vishwakarma, Akansha Singh

Abstract

The global outbreak of coronavirus disease 2019 (COVID-19) is affecting every part of human lives, including the physical world. The measures taken to control the spread of the virus and the slowdown of economic activities have significant effects on the environment. Therefore, this study intends to explore the positive and negative impacts of the COVID-19 pandemic on environment and economy. It also illustrates the need of sustainable management strategies of the COVID – waste disposal.

Introduction

The outbreak of coronavirus disease-2019 (COVID-19) first emerged at the end of December 2019, from the Hunan seafood market in Wuhan City of China, and declared as an international public health emergency in a couple of weeks by the World Health Organization (WHO, 2020a). It is an infectious disease caused by Severe Acute Respiratory Syndrome Coronavirus-2 (SARS-CoV-2) (Islam et al., 2020; Nghiem et al., 2020; Wang et al., 2020). Genomic analysis revealed that SARS-CoV-2 is phylogenetically associated with SARS viruses and bats could be the possible primary source (Chakraborty and Maity, 2020).

The pandemic has caused huge global socio-economic disruption, which directly or indirectly affected the environment like improvement of various environmental factors and restoration of ecology (Chakraborty and Maity, 2020; Somaniet al., 2020; Saadatet al., 2020).

Moreover, the increased use of personal protective equipment (PPE) and their haphazard disposal creates environmental burden (Fadare and Okoffo, 2020; Nghiem et al., 2020; Singh et al., 2020). Bio-medical waste (BMW) has remained the source of emerging pollutants categorically generated by healthcare practices (Datta et al., 2018). It also includes the medicine excretion by patients (Chartieret al., 2014).

The improper disposal of hazardous bio-medical waste (HBMW) poses severe risks to public health and the environment as it acts as a host of variety of pathogenic microorganisms. (Singh et al., 2020).

Therefore, effective management of HBMW is highly imperative to control the stemming transmission of infections. In this context, the World Health Organization (WHO) has directed the core principles in June 2017 by stressing on the right resource investment and complete commitment to reduce the





ST. ALOYSIUS' COLLEGE

(AUTONOMOUS), JABALPUR(M.P.)

Reaccredited 'A+' Grade by NAAC (CGPA 3.68/4.00)

College with Potential for Excellence (CPE) by UGC

DST-FIST Supported & Star College Scheme by DBT.

Sustainable Management With Special Focus on Dilemmas of Business Oriented Management

By
Dr. Dinesh Nilkant
Dr. Varsha Agarwal
Prof. Sunitha B K

Proceedings of International Conference on Sustainable
Business Management Practices and Social Innovation

ICSBMP SI-2021

Scanned with ACE Scanner

09



Sustainability Analysis of the E-Learning Education System during COVID-19 Pandemic

Dr. Nidhi Khurana¹

¹Asst. Professor, St. Aloysius College (Auto.) Jabalpur M.P.

E-mail Id: khurana.nidhi00@gmail.com

"Accessing and adapting to technology and bringing those to students and learners is the major challenge. So, make them comfortable with the technology."

-Viveka Von Rosen

Abstract

Education system has been greatly affected worldwide due to COVID-19 pandemic, thereby leading to the closures of schools, universities and colleges. The coronavirus pandemic has spurred the adoption of distance learning at all education levels. Educational sector need to focus and plan for future where classes can be quickly adapted to online or hybrid learning. Changes in society, student expectations, and technology are motivating university and college faculty to rethink pedagogy and teaching methods. Therefore, the purpose of this study is to investigate the students' perception on online learning and their satisfaction level in the midst of a COVID-19 pandemic. This study throws light on the availability and mode of internet access, familiarity with online learning tools by students etc. The Primary data was collected through a questionnaire from school and college students in Jabalpur city, India. Necessary statistical tools have been used to interpret the data. The results of this study may help the educators to rethink their pedagogies and teaching methods in such a way so as to enable the students to adapt the change with full interest and enthusiasm thereby making teaching-learning more effective and reliable.